देखि देखि सुर सिद्ध भुलाने मात पिता हरषावैजी ॥
बिहरत जहां ब्रह्म अविनाशी धनि ब्रज कहिय न जावैजी ॥
परते पर जो निर्गुण रूपा अलख लखन नहिं आवैजी ॥
सो ब्रज भक्तन प्रेम बिबस हरि लीला अमित उपावैजी ॥ २॥

अथ न्हवावन लीला ॥

दोहा—निशि दिन जात न जानहीं, प्रेम मगन पितु मात ॥
सुनत वचन देखत दरश, क्योंहूं मन न अघात ॥

चौबोला—क्योंहूं मन न अघात न्हवावन कह्यो यशोमति माईजी
लोट गये हरि मानत नाहीं लै उबटन गहिवाईजी ॥
मैं बलि उठहु न्हवाऊं प्यारे न्हावहु लाल कन्हाईजी ॥
फुसलावत सुत श्याम कन्हाई उबटन धरत चुराईजी ॥ १ ॥
मैं बलि ऐसो हठ नहिं कीजे जो चाहै सो लीजैजी ॥
ऐसो को जो तोहिं खिजावै रोवत झंगुली भीजैजी ॥
अतिरिसते मैं बलि तनु छीजे कोमल अंग पसीजैजी ॥
बरजत ही बरजत बिरुझाने करत क्रोध मनखीजैजी ॥ २ ॥

दोहा—धरत धरत धरणी परत, गहि जननीके चीर ॥
तोरत भूषण अंगके, फोरत भाजनसीर ॥

चौबोला—फोरत भाजनसीर तप्तजल धऱ्यो यशोमति माईजी॥
मानत नाहिं ताहि लखित्रासे महरि बांह धरल्याईजी ॥
गिरत परत गये भाजि मातसों करि दुचिती सुखदाईजी ॥
नेक निकटलागत नहिं मोहन मानत बातेंनाईजी ॥ १ ॥
श्याम भेद कहि कहि समुझाये तब पुचकारे माताजी ॥
नहिं आवहुतो जानिहो मोहन मैं बलि आवहु ताताजी ॥
तुम मेरी रिसको हरि जानो मानहुँ मेरी बाताजी ॥

जो नहिं आवहु मदन गुपाला बांधों तुम्हरो गाताजी ॥ २ ॥
दोहा—उतते आये नंदजी, किनमेरोलाल खिजाय ॥
लै पहुँचाये मातपै, लीने कंठलगाय ॥
चौबोला—लीने कंठ लगाय कहत नंद कत हरिपैरिसहाईजी ॥
लिये लगाय हिये नँदरानी क्योंहुं यत्नकरिपाईजी ॥
उबटन हरिके अंगलगायो पुनितातो जलल्याईजी ॥
दिये न्हवाय वदन शशिधोयो अंग अंगोछत माईजी ॥ १ ॥
अंजन दोऊदृगन भरिदीनों भोंपर चाप बनाईजी ॥
सब अंगके भूषण मँगवाये लालनको पहराईजी ॥
ऐसीरिश नहिं कीजै मोहन अब कछु खाहु कन्हाईजी ॥
तब तुतराय कहो कहाहैरी मोहिं भावै सोइ खाईजी ॥ २ ॥
दोहा—कहाति मात या वचनपर, मैया बलि बलि जाय ॥
जोइ जोइ भावै लालको, सोइ सोइ ल्यावत माय ॥
चौबोला—सोइ सोइ ल्यावत मात किये मैं बहु पकवान मिठाईजी
सो सब कहूं बखान जो भावै सो तुम कहो कन्हाईजी ॥
सदमाखन अरु दही जमायो तुम हित अति औटाईजी ॥
खोवा औट्यो मधुर मलाई मिश्री पीस मिलाईजी ॥ १ ॥
अरप्योसार अति सरस सँवारी सोंठ मिरच रुचि कारीजी ॥
खीर बरा करिकै दधि बोरे चन्द अमीते भारीजी ॥
खुरमा और जलेबी बोरी जो रुचि होय तुम्हारीजी ॥
अरु लाडू बहु भांति सँवारे कोमल मधुर सुधारीजी ॥ २ ॥
दोहा—अरु गूंझा पूरनपुरी, अति सवाद ताहोय ॥
बावर घेवर घृत पके, मिश्री मिश्रितसोय ॥
चौबोला—मिश्री मिश्रित सोय सुन्दर मालपुवा करि ल्याईजी ॥
तत्त तुरत रोहिणि कर आने तुम्हरे हेतु बनाईजी ॥

सरस सँवारी दाल ममूरी सीरा पुरी बनाईजी ॥
पूरी सुनिकै हरि हिय हरषे तब जेवन रुचि आईजी ॥ १ ॥
सुनत तुरत तब मात यशोदा हर्षि थार लैआईजी ॥
बलदाऊको टेर बुलायो तबै महर नँदराईजी ॥
खटरसके पकवान जे बरने प्रथम यशोदामाईजी ॥
परसिधरे सब थार हर्षि तब जेवत दोऊ भाईजी ॥ २ ॥

दोहा—जेवत एकहि थार दोउ, लखि जननी सुखपाय ॥
शीतल जल यशुमति हरि, भरिझारी लै आय ॥

चौबोला—भरिझारी लै आय दोऊ तब जेवत अति हरषाईजी॥
तब जननी हँसि चुरू भराई दीनो मुख पखराईजी ॥
रचिरचि उजरे पान खवाये अधर अरुणता आईजी ॥
उबरी सो सब झूठन हरिकी दास बिहारी पाईजी ॥ १ ॥
सखा वृंद प्रिय द्वार पुकारे खेलन आहु गुपालाजी ॥
त्रसित दरश रस चातकदासा बरसहु दरश दयालाजी ॥
विनय वचन सुनि हर्षि कृपाला चले मनोहर चालाजी ॥
कमल नयन उरबाहु विसाला ललित चरणकर लालाजी ॥२॥

दोहा—चन्द्र बदन राजत सुभग, सुन्दर छबि घनश्याम ॥
अंग अंग भूषण ललित, शोभित अति अभिराम ॥

चौ०-सोभितअतिअभिरामनिरखिछबिथकितसकलसुरवृन्दाजी
निहचल चखत चकोर भये जनु तकत शरदको चंदाजी ॥
उमँग मिले सबको हरि जाई ग्वालन अति आनंदाजी ॥
क्रीडत बालक वृंद मिले जिमि उडगण शशि सुख कंदाजी॥१
खेलत दूर गये कहुँ कान्हा सखन संग चले जावैजी ॥
बहुत अबेर भई है श्यामहिं अब क़ब धौं घर आवैजी ॥
नंदहि तात मात मोहिं कानन योंहीं सुनत सुहावैजी ॥

मन अवसेर करत महतारी पलक ओट नहिं चावैजी ॥ २ ॥
दोहा—देखति द्वार गलीनमें, सुतमुख दरशनकाज ॥
खेलतते आये हरि, दौरिं मिले ब्रजराज ॥
चौबोला—दौरि मिले ब्रजराज कहतिकत खेलन दूर नजाईजी ॥
मैं बलि तुम अबहीं अति नान्हा मानों बात कन्हाईजी ॥
आज एक वन हाऊ आयो सो वह मैं सुनि पाईजी ॥
इकलरिका भजि आयो तिन सब कह्यो मोहिं समुझाईजी ॥१॥
वह तौ पकरिलेतहै तिनको लरिका करि जो पावैजी ॥
चलहु भाजि चलिये हरि धामहिं बलिको मात बुलावैजी ॥
कनियां करि लै आई यशुदा दोउभैया छवि छावैजी ॥
बडभागिन यशुदा नंदरानी बहु विधि लाडलडावैजी ॥ २ ॥
दोहा—रूप रेख जाके नहीं, विधि हर अंत नपाय ॥
हाऊ सों डरपायतिहिं, यशुमति राखति स्वाय ॥
चौबोला—यशुमतिराखतिस्वायभाववशरहतहरी भगवानाजी ॥
जैसे भजै ताहि हरि तैसे भक्तनको सुख खानाजी ॥
ब्रज बीथिन खेलत मनमोहन सखा संग ले कान्हाजी ॥
और गोप बालक बहु बारे एक बैस सब नान्हाजी ॥ १ ॥
बाल विनोद मोद मनदीने नाना रंग उपावैजी ॥
तारी मारि हाथ परभाजे होड लगाकरि धावैजी ॥
बरजत बलि हरि तूमति दौरे गिरहि चोट लग जावैजी ॥
तब हरि कह्यो दौरिमैं जानूं लखि बलि तन मुसकावैजी ॥ २ ॥
दोहा—श्रीदामा मम जोट है, तासों होड लगाय ॥
तब बोल्यो श्री दामयों, भाजहुमारि कन्हाय ॥
चौबोला—भाजहु मारि कन्हाय कही तब भाजे हरिदेतारीजी ॥
धऱ्यो धाय तबहीं श्रीदामा पकरि लिये बनवारीजी ॥

तब हरि कह्यो बच्यो नहिं तोई अब तारी फिरमारीजी ॥
ऐसे कहि हरिताहि रिसाने देत दिवावतगारीजी ॥ १ ॥
बोल उठे बलराम कह्यो तब इनके बाप न माईजी ॥
हार जीत जानत नहिं काऊ लरकन पाप लगाईजी ॥
ये हैं तनके श्याम झूठही झगरत खेलमझाईजी ॥
रूठि चले हरि धामदेखि उठ पूछति यशुदाआईजी ॥ २ ॥

दोहा—क्यों उदास घरआइयो, किन मेरो लालखिजाय ॥
मैया दाऊ दुख दियो, कहत मोल तुम आय ॥

चौबोला—कहत मोल तुम आय करहु कहा अबयारिशके माईजी
मैं नहिं खेलनजाउँ दुवारे लरिका मोहिं खिजाईजी ॥
पुनि पुनि कहत कौन तेरी मैया कौन तात को भाईजी ॥
तुम कारे किम यशुदा गोरी गोरेही नंदराईजी ॥ १ ॥
मोसों कहत देवकीजायो लै वसुदेवहि आयोजी ॥
मोल कछुक वसुदेवहि दीनों तापलटे रखवायोजी ॥
ऐसे कहि कहि मोहिं खिजायो लरकन सबन सिखायोजी ॥
मोहिंको दाऊमारनधावै अरु मोहिं बहुत डरायोजी ॥ २ ॥

दोहा—सुनहु श्याम बलरामजी, झूठहि तोहिं खिजाय ॥
गोधनकी सौंहै मोहि, तुम सुत मैं तेरी माय ॥

चौबोला—तुम सुत मैं तेरी माय पाछे नंद सुनत बात हरषाईजी॥
लीने गोद उठाय हर्षि मन सुन्दर हरि सुखदाईजी ॥
सुनि मन हर्ष श्याम तब कीनो बलहि धरचो नँदराईजी ॥
करत चारित जनके सुखदायक लीला कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
भोजनके समये नँदराई सुरत करे दोउ भाईजी ॥
कह्यो बुलाय लेहु दोउ भैया मोसँग जेवैं आईजी ॥
खेलत बहुत बेरभई आजू उन बिन मैं नहिं खाईजी ॥

यशुमति सुनत चली अतुराई खोजत ब्रजमें जाईजी ॥ २ ॥

अथ भोजनकरन लीला।

दोहा–कहति बोल लेवहु कोऊ, खेलत धौं कित जाय ॥
जेवन सिद्ध सिरातहै,उन बिन नंद न खाय ॥

चौबोला–उन बिन नंद नखाय यशोमति खोजत टेर लगाईजी ॥
आये खेलतते दोउ भाई हरिजनके सुखदाईजी ॥
चलहु तात भोजन अब कीजै मैं तुम्हरी बलिजाईजी ॥
जेवनको बैठे नंदराई तुम बिन सोउ न खाईजी ॥ १ ॥
परस्यो थार धरचो मग हेरत मैं तुम फिरत बुलाईजी ॥
दौरि चलो आगे गोपाला कहति यशोमति माईजी ॥
सोराजा जो आगे आई दौरहु दोऊ भाईजी ॥
तौ हँसिहैं तोहिं ग्वाल कन्हाई जो आगे बल जाईजी ॥ २ ॥

दोहा–आये दौरहि श्याम तब, तुरतहि पांय पखार ॥
बैठे जेवन नंदके, सँग दोऊ सुकमार ॥

चौबोला–संग दोऊ सुकुमार कछुक खावत कछुकर लपटाईजी
सुभग सांवरे गात बाललीला कछु मनमें भाईजी ॥
बड़ो कौर मेलत मुख माँई मिरच दशनतर आईजी ॥
तीक्षण लगी नैन भरि आये रोवत बाहिर जाईजी ॥ १ ॥
रोहिणि फूंक देत मुख माँई उरसों लिये लगाईजी ॥
मधुर ग्रास लै तात निहोरे लै बैठे फुसलाईजी ॥
जेवत कान्ह नंदकी कनियां छबि निरखत दोउ माईजी ॥
बेसनके व्यंजन विधिनाना बहु पकवान मिठाईजी ॥ २ ॥

दोहा–मूंगहरे सुन्दर अति, हरदी हींग मिलाय ॥
दालचनाकी पीत रंग, उज्ज्वल भात पसाय ॥

चौबोला–उज्ज्वल भात पसाय रोटी पतरी कनक मिलाईजी ॥
आम आदि बहु भांति अथाने जेवत दोऊ भाईजी ॥
मिश्री दधि ओदन मिश्रितकर लेत श्याम करनाईजी ॥
आपुन खात नंद मुख नावैं सो छबि बरनि न जाईजी ॥ १ ॥
भोजन कर अचवन तब कीनो लै झारी भरि आनीजी ॥
अपने करते यशुदा हरिको धोयो मुख ले पानीजी ॥
भाग्य यशोमति महरनंदके को कहि सकत बखानीजी ॥
बाल रूप जिनके घर माहीं रह्यो ब्रह्म रुचि मानीजी ॥ २ ॥

अथ पयछुडावन लीला ॥

दोहा–बैठे कनियां मातकी, पियत दूध हँसि कान्ह ॥
बारबार यशुमति कहत, छुडवत स्तनपान ॥

चौबोला–छुडवत स्तनपान श्याम तुम सुनहू परम दयालाजी॥
मेरो कह्यो लाल अब मानो दूधन पियहु गोपालाजी ॥
दूध पियत देखत लरिका सब हँसत सकल यह ग्वालाजी ॥
जैहैं दांत बिगर सब तेरे परहिं पीत रंग लालाजी ॥ १ ॥
आये सखा बुलावन तबहीं खेलहु जाहु कन्हाईजी ॥
यह सुनि हर्षि उठे बनवारी दे चौगान बताईजी ॥
मथनीके पाछे कहि दीनों हर्षि श्याम लियो जाईजी ॥
लै चौगान बटा तब आगे मिले सखन हरषाईजी ॥ २ ॥

अथ चौगान खेलन लीला ॥

दोहा–कहत सखनसों हँसि हरी, खेलोगे किहिं ठांय ॥
खेलन बने निकासपर, हर्षि चले सब जाय ॥

चौबोला-हर्षि चले सब जाय कान्ह हलधरकी अति शुभजोरीजी॥
श्रीदामा अरु सुबल आदि सब मिले सखा इक ठौरीजी ॥

और सखनके वृंद बांट लिये जोट बना दोउ ओरीजी ॥
अति आनंद नंदनंदन तब दियो बटाके टोरीजी ॥ १ ॥
बटा मारि चौगाननिफेरे इत उतते सब धावैंजी ॥
आप आपनी जीत विचारें मारि बटा टरकावैंजी ॥
जम्यों खेल अति मगन कन्हाई सुरगण मनहिं लुभावैजी ॥
जीतत सखा श्याम जब जाने तब हारि रुगटी खावैजी ॥ २ ॥

दोहा—कहत सखा सब सुनो हरि, रुगटिन कौन खिलाय ॥
श्रीदामासों हारि तुम, झूंठहि सौगंद खाय ॥

चौबोला—झूंठहि सौगंद खाय खेलमें को काऊको सैयांजी ॥
अब हम सब तुम संग न खेलैं कहा भयो नंद सैयांजी ॥
ताते तुम गर्वित मनमाहीं बसत तुम्हारी छैयांजी ॥
अति अधिकार जनावत ताते अधिक तुम्हारे गैयांजी ॥ १ ॥
भये सखा सब रिसकर न्यारे संग न खेलें तोरीजी ॥
दियो दान तब पीठ चढाई चली नहीं कछु जोरीजी ॥
जाके गुण गण अगम अतीता निगम न पावत ओरीजी ॥
सोप्रभु खेलत ग्वालनके सँग बँधे प्रेमकी डोरीजी ॥ २ ॥

दोहा—जननी टेरत श्यामको, खेलत भई अबेर ॥
सांझ समय नाहिं खेलिये, आवहु धाम सबेर ॥

चौबोला—आवहु धाम सबेर सांझ भइ आवहु सदन कन्हाईजी ॥
बहुरि खेलियो होत सकारे आप बांह गहिल्याईजी ॥
सुभग श्याम तन रज लपटानी झारति यशुदा माईजी ॥
बोललिये यशुमत बलरामहि दोउ भइयन लैआईजी ॥ १ ॥
धूरि झारि तातो जल ल्याई दिये दोउ भ्रात न्हवाईजी ॥
सरस वसन तन पोंछि सँवारे घर भीतर लैआईजी ॥
करहु बियारू कछु दोउ भाई बहुरि तुम्हैं पौढाईजी ॥

सीरा पूरी सरस सँवारी बहु पकवान मिठाईजी ॥ २ ॥
दोहा-परसि धरे सब थार मे, दोउ भैया मिलखाय ॥
मिश्रीमिश्रित दूध कर, ल्यावति रोहिणि माय ॥
चौबोला-ल्यावति रोहिणिमाय प्रीतिकरिदोऊ भ्रातजिमावैजी॥
देखि देखि दोउ मात सिहावत लखि छबि मनसुखपावैजी ॥
खात खात मोहन अलसाने बारबार जमुहावैजी ॥
आलससों करकौर उठावत नैननींद झुकिआवैजी ॥ १ ॥
उठहु लाल जननी तब बोली धोयो मुख हित माईजी ॥
लेपौढाये सेज दोऊ सुत राम श्याम दोउ भाईजी ॥
सोये दोउ सुख सेज भवनमें बल अरु कुँवर कन्हाईजी ॥
सोचति गुण हरिके मनमाहीं यशुमति अति हरषाईजी ॥ २ ॥
दोहा-माखन मोहनको प्रिय, जागत जबसोइरीत ॥
मैं यह जानति श्यामको, अतिही प्रियनवनीत ॥
चौबोला-अतिही प्रियनवनीत मथनिले हरि हितदधिहमथावैजी
अतिहित कारि माखन सद्काढत जबलगि उठनहिं पावैजी ॥
भोरभयो जागहु नँदनंदन सँगके सखा बुलावैजी ॥
पक्षी तरुताजि चहुँ दिश धावैं सुरभी बच्छपियावैजी ॥ १ ॥
चन्द मलिन उडुगण द्युतिनाशी अब रविकिरण निकारीजी ॥
गूंजत मधुपलंतालगि भूले कुमुदिन समखिले बारीजी ॥
दरशन हित सब ब्रजजनआये मुदित सकल नरनारीजी ॥
सुनि जननीके वचन कृपाला खोले दृग बनवारीजी ॥ २ ॥

अथ माखन चोरी लीला ॥

दोहा-हँसत उठे संतन सुखद, मुख छबि देखति माइ ॥
हरि कछु करहु कलेउ अब, माखन रोटी ल्याइ ॥

चौबोला–माखन रोटी ल्याइ तनक देरी मेरे करमाईजी ॥
कछु मेवाधर साथ सुनतही तुरत मातलै आईजी ॥
श्याम राम दोउ करत कलेऊ ब्रज जीवन सुखदाईजी ॥
चार पदारथ हाथ हरीसो अखिल लोकके राईजी ॥ १ ॥
मैयारी मोंहि माखन भावै और न कछु रुचिं आवैजी ॥
मधु मेवा पकवान मिठाई सो मोको नहिं भावैजी ॥
ब्रज युवती इक पाछे ठाढी हरिके वचन सुहावैजी ॥
मन मन कहि कबहूं मेरे घर माखन खावत पावैजी ॥ २ ॥
दोहा–जा बैठे मथनी निकट, करसों काढि निखाय ॥
मैं देखौं बर दूरि छिप, कैसे मोघर जाय ॥
चौबोला–कैसे मो घर जाय हरी अंतर्यामी मन आईजी ॥
ग्वालिनि मनकी प्रीति पिछानी गये श्याम सुखदाईजी ॥
ठाढे भये जाय द्वारे पर इत उत कोऊ नाईजी ॥
तब बैठे ताके घर माईं सो ग्वालिन लखि पाईजी ॥ १ ॥
रही दबकि दुर दीठ लगाई बैठे मथनी पाईजी ॥
देखी माखन भरी कमोरी खान लगे हरषाईजी ॥
चितै रहे मणि खंभ हरी तब निज अपनी परछाईजी ॥
जानि दूसरो ग्वाल ताहिसों सकुचे हरि मन माईजी ॥ २ ॥
दोहा–कहतलेहु आधो तुमहुँ, तासों करत सयान ॥
भलो बन्यो है संग अब, हम तुम येक समान ॥
चौबोला–हम तुम एक समान आज मैं प्रथमहिं चोरीठानीजी ॥
तुमको देखि बहुत सुख पायो तुम हम एक समानीजी ॥
अब तुम मेरे सँगानित आवो काहुअनाहिजनानीजी ॥
सुनि २ हरिके मुखकी वानी उमँगी ग्वालि सयानीजी ॥ १ ॥
श्याम चौंकि मुख तासु निहारी भाजचले ब्रजखोरीजी ॥

अतिआनंद ग्वालि मनमाईं पूँछति अरु इक गोरीजी ॥
कहातोहिं अति आनँद हैरी गई वस्तु मिलि तोरीजी ॥
गदगद कंठ पुलकितनतेरो देख्यो सोइ कहोरीजी ॥ २ ॥
दोहा—तनन्यारो मन एक है, भेद हमें तुमेंनाहिं ॥
सुन सखि मैं सुख देखियो, सोतोहिंदेहुँ सुनाहिं ॥
चौबोला—सो तोहिदेहुँ सुनाहिं यशोमतिसुत सुन्दरसुखदाईजी।
आयो आज हमारे चोरी सोमैं दुर लखिपाईजी ॥
खंभनिकट मथनीको माखन लियो निकारानि खाईजी ॥
मैं भीतर दुर देखन लागी मोहन छबि मनभाईजी ॥ १ ॥
देखिखंभ प्रतिबिंब हरी तब मन कछु सकुचे श्यामाजी ॥
अर्धभाग तिहिंदेन कह्यो हरि प्रगटकरो जिननामाजी ॥
तब नरह्यो मनधीर हँसी मैं सुनत वचन अभिरामाजी ॥
मनमेरो हरलीनो आली यशुमति सुत सुखधामाजी ॥ २ ॥
दोहा—मोहिं देखि भाजे हरी, सो छबि बरणि नजाय ॥
सुने चरित हरिके सखी, रह्यो प्रेम उर छाय ॥
चौबोला—रह्यो प्रेम उर छाय कहति मनमें देखन नाहिं पाईजी ॥
सुने चरित हरिके अभिरामा सो अभिलाष बढाईजी ॥
हरि अंतर्यामी सब जानें ताके मनकी पाईजी ॥
इहि विधि माखन प्रथम चुरायो करी ग्वालिन मन भाईजी ॥१॥
भक्त वत्सल संतन हितकारी पुनि मनमें यह आईजी ॥
माखन चोर नाम कहवाऊं अब या ब्रजके माईजी ॥
बाल रूप मोहिं यशुमति जाने ग्वालिन प्रेम सुहाईजी ॥
मित्र भाव करि सखा बखाने प्रीति रीत मन लाईजी ॥ २ ॥
दोहा—मन भाई सबकी करों, इन हित गोकुल आय ॥
भक्त कृपा अंबुज अली, यह विचार ठहराय ॥

चौबोला–यह विचार ठहराय सखा सब लीने निकट बुलाईजी ॥
तिनसों हँसि हँसि कहत कन्हाई बात कहों तुम पाईजी ॥
माखन खैये चोरि सबै मिल सब ब्रज घर घर माईजी ॥
कीजै बाल विहार कहत हरि मेरे मन यह आईजी ॥ १ ॥
सुनि हरषे सब ग्वाल परस्पर देत सखा सब तारीजी ॥
तुम बिन यह विधि कौन विचारै भली कही बनवारीजी ॥
चले सखालै माखन चोरी भोरे बैस सब बारीजी ॥
देख्यो झांकि झरोखाओरी मथित एक दधि ग्वारीजी ॥ २ ॥

दोहा–मथनीमें जान्यो मठा, माखन सों लपटात ॥
ग्वालिन गई कमोरि हित, तब पाई हरिघात ॥

चौबोला–तब पाई हरि घात सखन लै गये ताके घर माईजी ॥
दधि माखन सबहिन मिल खायो रह्यो नेक नहिं राईजी ॥
छूछू मटकी छांडि सिधाये हँसत द्वार सब जाईजी ॥
आय गई बाला तिन घरते निकसत लखे कन्हाईजी ॥ १ ॥
दधि माखन कर मुख लपटान्यो सो कछु जान न पाईजी ॥
देखि रही हँसि मुखकी सोभा सुन्दर रूप कन्हाईजी ॥
चमकि गये हरि सखन समेता गई ग्वालि घर माईजी ॥
देखी जाय मथनियां रीती चकित भई अधिकाईजी ॥ २ ॥

दोहा–मन हरलीनो साँवरो, मोहन मदन गुपाल ॥
जान लियो तब ग्वालनी, यह सब हरिके ख्याल ॥

चौबोला-यह सब हरिके ख्याल मगन भइ आनँद उर न समावैजी
घर घर प्रगट भई यह बाता सखा संग लै जावैजी ॥
नंदसुवन ब्रजराज हरीसो चोरी माखन खावैजी ॥
धरिहो माखन राखि, हरी हित ब्रजतिय ध्यान लगावैजी ॥१॥
कहति परस्पर ग्वालि सयानी मोहन रूप लुभाईजी ॥

माखन खान देह गोपालहि मतिबरजो कोउ माईजी ॥
तुम जानति हरि कछु नहिं जानत वे स्याने अधिकाईजी ॥
कोऊ कहति पकरि जो पाऊं तौ गहि कंठ लगाईजी ॥ २ ॥
दोहा—जो मेरे आवहिं हरी, माखन देहुँ खवाय ॥
एक कहति मैं पकरिकै, छांडूंनाच नचाय ॥
चौबोला-छांडूं नाच नचाय कहति कोउ जो हरिको गहि पाईजी ॥
तौ हरिको करधरिकै तबहीं यशुमति पै लैजाईजी ॥
इक कहि आज हमारे आये देखत गये पराईजी ॥
यहि विधि प्रेम मगन ब्रजबाला निशिदिन ध्यान कन्हाईजी ॥१॥
गये श्याम सूने ग्वालिन घर सखन द्वार बैठायोजी ॥
देख्यो भीतर जाय कन्हाई राख्यो माखन पायोजी ॥
सदमाखन देख्यो हरि तबहीं अति मन हरषबढायोजी ॥
सखा बुलाये दैदै सैनन माखन सब मिल खायोजी ॥ २ ॥
दोहा—कछु संशय मनमें कियो, इत उत चितवतजात ॥
उठि उठि झांकत द्वारतन, बांटतदधि अरुखात ॥
चौबोला—बांटतदधिअरुखात लखतसोग्वालिन ओटछिपाईजी॥
मगन भई हरिके रसमाई आनँद उर न समाईजी ॥
लीन्ही बोलि सखी ढिंग औरै ताहि दिखावत जाईजी ॥
उठि अवलोकि ओट ह्वैठाढी सोभा परम सुहाईजी ॥ १ ॥
किहिं विधिहै दधि लेत कन्हाई सखन देत अरु खावैजी ॥
बदन समीप पाणि शुभ राजत माखन अति छवि छावैजी ॥
गिर गिर परत बदनते ऊपर दधिकी बूंद सुहावैजी ॥
मनहुँ प्रलय जल आगम बरसत इन्दु किरणबरसावैजी ॥ २ ॥
दोहा—मुखछबिदेखत श्यामकी, थकित भईब्रजनारि ॥
कहत बनत नहिं काहुते, रहत हृदयमें धारि ॥

चौबोला—रहत हृदय में धारि बाललीला लखि अति सुखपाईजी
भई सिथिल ब्रजबाम निरखि छबि तनकीसुरत भुलाईजी ॥
बरजनको स्फुरत नहिं वाणी भई मगन मनमाईजी ॥
गये ठगोरी लाय कन्हाई रह्यो प्रेमउर छाईजी ॥ १ ॥
विश्वभरन पोखन करनहारि कल्पतरोवर नामाजी ॥
सो प्रभु दधिचोरी कर खावे प्रेमविबस घनश्यामाजी ॥
ब्रज में नित उठ करत बिहारा घर घर सुखके धामाजी ॥
ब्रजजन प्राण आधार हरीसो पुरवत जन मन कामाजी ॥ २ ॥

दोहा—श्याम गये इक ग्वालिघर, पकरलिये गोपाल ॥
बहुत अचगरी करत तुम, अब कहां जैहोलाल ॥

चौबोला—अब कहांजैहोलाल दिवस निशिमोकोबहुताखिजाईजी
दधि माखन मेरो सब खायो कीनी बहुत ढिठाईजी ॥
दोउभुज पकरि कह्यो कित जैहो दधिदे छूटनपाईजी ॥
ताके मुखतन चितै कन्हाई कह्यो वचन मुसकाईजी ॥ १ ॥
तेरी सों मैं छुयो नराई सखा गये सबखाईजी ॥
चितवनमें तनमन उरझान्यो रही ग्वालि सुखपाईजी ॥
सुनत मनोहर हरिकी बतियां लीने कंठलगाईजी ॥
बैठोलालखाहु दधि माखत मैं तुम्हरी बलि जाईजी ॥

दोहा—गई ग्वालि दधि लेन तब, गये श्याम ब्रज खोरि ॥
रही ठगीसी ग्वालनी, लीन्हों मन हरि चोरि ॥

चौबोला-लीन्हों मन हरि चोरि श्याम तब और ग्वालिघरआयेजी
देख्यो जाय द्वार नहिं कोऊ भीतर भवन सिधायेजी ॥
माखन काढि निसंक खान लगे मन अति हरष बढायेजी ॥
ग्वालिन आवति जानी घर तन तब उठ ओट छिपायेजी ॥१॥
घरमें आय ग्वालिनी भीतर मथनीके ढिग आईजी ॥

भाजनरीतो देखि चकित भई चितवत इत उत माईजी ॥
अबहिं गई आई इन पाँयन माखन किन लियो खाईजी ॥
भीतर गई तहां हरि पाये पकरे कुँवर कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा—हरि सरमे निज नाम ले, कछुक नैन भरे आय ॥
देखि वदन छबि ग्वालनी, जान दिये सुखपाय ॥
चौबोला—जान दिये सुखपाय भयो आनंद सो उर न समाईजी॥
कहन चली अति परम हुलासा नंद भवनपर आईजी ॥
जो तुम सुनहु यशोमति माई हँसि हो सुनि लरकाईजी ॥
आज गयो चोरी मेरे घर तुम्हरो कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
जब मैं कह्यो भवनमें कोहै तब निज नाम बतायोजी ॥
लगेलेन लोचन भर आंसू तब मैं कंठ लगायोजी ॥
सुनत श्याम तब रोहिणि कनियां सकुचि मंद मुसकायोजी ॥
ग्वालिन हँसि हरिको डरपावत चोर पकर मैं पायोजी ॥ २ ॥
दोहा—करों नोयकी दाँवरी, बांधो अपने धाम ॥
लाय लिये उर रोहिणी, बांध सकै को श्याम ॥
बांध सकै को श्याम चरित सुन यशुमति मन हरषाईजी ॥
ऐसे काज न करहु लालरे सुनहू कुँवर कन्हाईजी ॥
पुनि इक गेहं गये नँदलाला द्वारे ग्वालि लखाईजी ॥
ऐसी बुद्धि उपाय फांदपरे हरि पिछवारे जाईजी ॥ १ ॥
भांडे मूंदत धरत उतारत माखन देख्यो जाईजी ॥
लगे खान मनु आप जमायो अति रुचि हरष बढाईजी ॥
आहट सुनि युवती घरआई देखे कुँवर कन्हाईजी ॥
अँधियारे घर श्याम गये दुरि मट्ठकी ओट छिपाईजी ॥ २ ॥
दोहा—सकल जीव उर बसतसो, कीन्हों कछुक प्रकास ॥
ग्वालिन हेरति श्यामको, ढूंढत सकल अवास ॥

चौबो०-ढूंडत सकल अवास कहति मन देख्यो अबहिं गुपालाजी
कितहि गयो पछितात मनहिंमन जानै हरिके ख्यालाजी॥
परिगये दीठ ओट मथनीके सुन्दर श्याम दयालाजी॥
तबहीं ग्वालिन भुज गहि लीनो अब कित जैहौ लालाजी॥१॥
कहो कहा चाहत तुम डोलौ धाम अँधेरे माईजी॥
बूझे बदन दुरावत काहू सूधे चितवत नाईजी॥
दधि मथनीमें हाथ तिहारो कहा करिहो चतुराईजी॥
सखा नहीं कोउ साथ तुम्हारे कहो कैसी बनि आईजी॥२॥

दोहा—मैं जान्यो घर आपनो, ताते निकसो आय॥
दधि भीतर चेंटी लखी, काढन लाग्योताय॥

चौबोला—काढन लाग्योताय सुनतसुख ग्वालिनमनमुसकानीजी
तुम हो रतिनागर मनमोहन नागरता हम जानीजी॥
उर लगाय मुख चुंबनकीनो विदा किये सुखदानीजी॥
उरहन मिस यशुमति ढिग आई हरिकें प्रेम लुभानीजी॥१॥
सुनहु महँरि निज सुतकी करनी अतिही ढीठ कन्हाईजी॥
नित प्रति करत दूध दधि हानी कहां लगिकान्यरखाईजी॥
मैं अपने मंदिर अँधियारे माखन धरचो दुराईजी॥
सोऊ ढूँढ लियो हरि जाई नेकहु डरपतनाईजी॥२॥

दोहा—बूझे उत्तर तुरत ही, दीनो मोहिं बताय॥
चेंटी काढनको कह्यो, मथनीमें करनाय॥

चौबोला—मथनीमें करनाय बात यह ग्वालिन मुख सुन पाईजी॥
हँसिकै बोध कियो नँदरानी सुनहू कुँवर कन्हाईजी॥
परघर काहे जात ललारे बरजति यशुमति माईजी॥
मम लोचन आगे तुम खेलौ लीजे सखन बुलाईजी॥१॥
तुमरे बालविनोद देख सुख मेरो हियो सिराईजी॥

मोपैलीजै श्याम खाहु सो जो रुचि होय कन्हाईजी ॥
सब कछु तेरे धाम लेहु तुम परघर जाय बलाईजी ॥
माखन मांग्यो कुँवर कन्हाई मुदित मात लै आईजी ॥ २ ॥

दोहा–लगी खवावन मात कहि, दे मेरे करमाय ॥
दियो हाथ दोना तुरत, चले खात हरषाय ॥

चौबोला–चले खात हरषाय सखन संग लखि ब्रजजन सुखछायेजी
यमुना जात लखी इक ग्वाली ताके घर हरि आयेजी ॥
गये भवन ताके मनमोहन बालक संग सुहायेजी ॥
लखे तहँ शिशु दोय अयाने देखत भीर डरायेजी ॥ १ ॥
इत उत देखो गोरस नाहीं ऊंचे शिखर लखायोजी ॥
तब मनमोहन रच्यो उपाऊ तहँ ऊखल औंधायोजी ॥
तापर एक सखा बैठारचो तापर आपुन आयोजी ॥
इह विधि गोरस लियो उतारी सब मिल भोग लगायोजी ॥२॥

दोहा–दूध दियो ढरकाय सब, बछरा दिये निकासि ॥
लरिकनको डरपाय तब, चले अग्र सुखरासि ॥

चौबोला–चले अग्र सुखरासि ग्वालनी देखि सखा गये दौरीजी
फँसि भीतर मोहन परे आई रोकिलई तिन पौरीजी ॥
रोष भरी मुख बात प्रेममय भरी मगन सो गोरीजी ॥
कहति महरके तात जात कित करि माखनकी चोरीजी ॥ १ ॥
तब हरि ताकें मुख तन देख्यो ग्वालिन अधिक रिसाईजी ॥
ग्वालिन अति रिझभई श्यामको पकरि महरि परल्याईजी ॥
मानो महरि कह्यो तुम मेरो अति उतपात मचाईजी ॥
ग्वाल कंध चढि छीके परते गोरस लीनो जाईजी ॥ २ ॥

लावनी ॥

अरज तुम सुनो नंदरानी, करत हरि गोरसकी हानी ॥

टेक-गोरसमेरो सबहिन मिलखायो,दूध सबभूपरढरकायो ॥
सोवत शिशु चोंथि जगाआयो, गोरस ऊपरते छिरकायो ॥
और सब कहत मैं सकुचानी, करत हरिगोरसकीहानी॥ १ ॥
तुम्हें कहा अंगहि दिखराई, हैं गुण बडे श्याम माई ॥
सकुचि ह्यांलरिका ह्वै जाई, बाहिर फिर प्रगटत तरुनाई ॥
बात कछु परत नहीं जानी, करत हरि० ॥ २ ॥
बरजती क्यों नहिं सुत तेरो, कहा कहूँ नित प्रतिको झेरो ॥
गोरसकहूं धरौं दूर नेरो, चोर सब लेत सुवन तेरो ॥
ताऊपर बछरा बगरानी, करत हरि गोरस की हानी ॥ ३ ॥
बछर सब फिरत बनाहिंमाई, चोरिते अधिकहि चतुराई ॥
महरि हम इनते हारिपाई, कहांलगि गुणन कहूँ माई ॥
विहारन हरिछवि मनमानी, करत हरि गोरस की हानी ॥४॥

दोहा-सुनत ग्वालनीके वचन,यशुमति हरितन देखि ॥
भय सकोचयुतमुखनिरखि, कोमलललिताविशेखिं ॥

चौबोला-कोमल ललित विशेखि देखि कहि झूंठहिना मलगावैजी
पांच वरसको मेरा लाला कहा चोरीकर पावैजी ॥
चोरी मेरे सुतहि लगावै इहमिस देखन आवैजी ॥
खेलत रहत भवन में मेरो कब यह चोरी जावैजी ॥ १ ॥
छींके बँधे भवन अति ऊंचे हाथ कवन विधिनायोजी ॥
कौन वेग इतनो है आयो कब तेरो गोरस खायोजी ॥
हाथ नचावत आवत दौरी कहत जोई मन भायोजी ॥
बिहँसत चली ग्वालिन निज धामहिं निरखि श्याम सुख पायोजी

दोहा-बरही माखन बहुतहै, कबहूं नेक न खाय ॥
बरजति यशुमति श्यामको, मैं बलि जिन कहुँजाय ॥

चौबोला-मैं बलि जिन कहुँजाय तिहारे कारण षटरस नानाजी॥

कारि राखे पकवान मिठाई मेवा विविध विधानाजी ॥
इतो उपाय करत तू जाई परघर काहे कान्हाजी ॥
ब्रजकी बाढ़ी ग्वालि गँवारी बोलत मुख मनमानाजी ॥१॥
नाहिं कछु लाज न कानि बिचारैं कहत सोई मन आईजी ॥
नित उठ आवत प्रात चली इत झूंठहि दोष लगाईजी ॥
सन्मुख बादत शंक तजी उन बिकटहि बात बनाईजी ॥
दूध दही तेरे बहुतेरो सो तुम खाहु कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बुरो मानि हैं नंद सुनि, तू कित चोरी जाय ॥
दूध दही तेरे घनो, दूध तनो लख गाय ॥

चौबोला–दूध तनो लख गाय हरीको चोरी माखन भायोजी ॥
कैसे रहै प्रेमके बाँधे ग्वालिनके घर आयोजी ॥
इक ग्वालिन घर मांझ अँधेरे श्यामल तन दरशायोजी ॥
कछुक धरयो गोरस तहां पायो प्रथम सो भोगलगायोजी ॥१॥
कियो प्रगट दीपक गृह ग्वाली देखे श्याम कन्हाईजी ॥
भुजा चार धर दरश दिखायो ग्वालिन अचरज पाईजी ॥
दधि माखनकी बूंद सुहाई हरि उर पर छविछाईजी ॥
मानहुँ यमुना जलके माई उडुगणकी परछांईजी ॥ २ ॥

दोहा–इह छबि निरखत ग्वालनी, द्विभुज भये नंदलाल ॥
चकित बिलोकितहर्षि मन, देखि चरित ब्रजबाल ॥

चौबोला–देखि चरित ब्रज बाल कन्हाई अद्भुत छबिदरशाईजी॥
यह जाग्रत कै स्वप्न विशेखो कै मो मन भ्रमछाईजी ॥
गदगद कंठ रोमांचक फूली प्रेम मगन पुलकाईजी ॥
मन हरलीनो रूप दिखाई निकसिगये सुखदाईजी ॥ १ ॥
देखि श्यामके चरित उदारा ब्रज नारी सुख पावैजी ॥
होंय हमारे पुरुष हरी यह मांगति विधिहि मनावैजी ॥

घर घर करत बिलास मनोहर नाना भेष दिखावैजी ॥
ब्रज जन परमहुलास हरीके चरित कहत नहिं आवैजी ॥ २ ॥
दोहा–लखी श्याम इक ग्वालनी, मथती गोरसप्रात ॥
बेनी ढरकत पीठपर, उर अंचल फहरात ॥
चौबोला–उर अंचल फहरात यौबनके मदमाती इठलाईजी ॥
थर थरात मथनी दोऊ कर करषत रजू सुहाईजी ॥
गोरे अंग दिननकी थोरी मोरति अंग छबि छाईजी ॥
मढी उरोजन अंगिया गाढी मानहुँ काम सजाईजी ॥ १ ॥
रीझ रहे लखि नंददुलारे खेलत ताके द्वारीजी ॥
फिर चितई ग्वालिन द्वारे तन दृष्टिपरे बनवारीजी ॥
बोलि लिये हरिबे सूने घर लावत उरसों ग्वारीजी ॥
उमँग अंग अंगिया उरदरकी तनकी सुरत बिसारीजी ॥ २ ॥
दोहा–तबहीं सुन्दर श्याम घन, तरुण भये तिहिंकाल ॥
सो छबि देखी ग्वालनी, बहुरि भये शिशुलाल ॥
चौबोला–बहुरि भये शिशुलाल हरीके कौतुक अति सुखदाईजी
देखि रही मति गाति बिसराई आनँद उर न समाईजी ॥
माखन ले तब श्याम सुन्दरको अपने हाथ खवाईजी ॥
अति आनंद उमँगमन मांई तनकी सुरत भुलाईजी ॥ १ ॥
माखन खाय रिझाय तीयको रसिक शिरोमणि श्यामाजी ॥
छबिसागर नागर नँद नंदन आये अपने धामाजी ॥
बिन देखे क्षण रह्योनजाई नंदसुवन अभिरामाजी ॥
उरहनके मिस ग्वालि सयानी चली नंद गृह बामाजी ॥ २ ॥
दोहा–सुनहु महरि हरिके गुणन, कहा कहुँ कहीनजाय ॥
भाजत चोली फारिकै, माखन खाय ढुराय ॥
चौबोला–माखन खाय ढुराय कह्यो तब बोल उठे बनवारीजी ॥

१ स्तन। २ हृदय। ३ युवा। ४ बालक। ५ तमाशा।

झूंठहि बात लगावत आई ये सब ब्रज की नारीजी ॥
खेलत ते मोहिं लियो बुलाई भुज भरि उर मोहिंधारीजी ॥
मेरे कर अपने उर डारी आपुन चोली फारीजी ॥ १ ॥
माखन आपहि मोहिं खवायो मैं कब मांट ढुराईजी ॥
अति भोरी सुनि हरिकी बानी तब यशुमति रिसहाईजी ॥
जानतिहों जो कटाक्ष तिहारो भोरो बाल कन्हाईजी ॥
दैदै दगा बुलावत ताही करत सोई मन भाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बोलि बोलि निज निज भवन, भेटति भरि भरि अंग ॥
मेरे भोरे बालको, ग्वालिन निलज निसंक ॥

चौबोला-ग्वालिन निलज निसंक ता ऊपर उर नख घात बतावैजी
आपुन अति भोरी बनिआई कान्हे दोष लगावैजी ॥
बिना भीतही चित्र बनावै नित उरहन लैधावैजी ॥
श्यामहिं दीठ लगावत आई मिसकरि करि इत आवैजी ॥ १ ॥
अजहूं रोय रोय पय[1] मांगत मेरो बाल कन्हाईजी ॥
हरिके संग फिरत इठलाती तू जोबनमें छाईजी ॥
ग्वालिन सुनत यशोमति बैना रही मौन सकुचाईजी ॥
आनन[2] रोष प्रीति उरमाई उत्तर कह्यो न जाईजी ॥ २ ॥

दोहा–उत्तर कछू न आवही, चली भवन[3] सुख पाय ॥
यशुमति बरजाति श्यामको, तू कत परघर जाय ॥

चौबोला–तू कत परघर जाय यह सब गोरसके मद छाईजी ॥
फिरत ढीठ ग्वालिन इतराती अटपटिबात बनाईजी ॥
नित उठ उरहन देत भोरही कहत सोइ मन भाईजी ॥
मोपै मांगिलेत किन सोई जो तुमरी रुचि आईजी ॥ १ ॥
सुख उपजावहु मोरे गाता मधुरे वचन सुनाईजी ॥
अपनेही आंगनमें खेलो सखन संग दोउ भाईजी ॥

१ दूध। २ मुख। ३ घर।

मोहिं सुखदीजे लाल आपने बालबिनोद दिखाईजी ॥
सुन्दर श्याम सुजान हरीपर कोटिकाम बलिजाईजी ॥ २ ॥
दोहा—करत बाललीला ललित, गोप बाल लैसाथ ॥
मथुरा जावति ग्वालनी, सोचितई ब्रजनाथ ॥
चौबोला—सोचितई ब्रजनाथ बैठरहे हरि पिछवारे जाईजी ॥
सखासंगले नंददुलारे करत चरित सुखदाईजी ॥
कहति परोसनसों समुझाई सुनत सो कुँवर कन्हाईजी ॥
बेचनजात सखी मैं गोरस घरतन चितयो माईजी ॥ १ ॥
सदमाखन द्वैमाट धरचो है कहति तोय समुझाईजी ॥
नंद सुवन आवै नाहिं आली और कछूडरनाईजी ॥
यों कहि चली ग्वालिनी जबहीं गये श्याम घरमाईजी ॥
ग्वांलिन कछु आहट सुनपायो सो पुनि फिर घर आईजी ॥२॥
दोहा—देखिसखा सबभजिगये, पकरिलिये नँदलाल ॥
औरन दीने जान मैं, तुमकित जातगुपाल ॥
चौबो०-तुमकितजात गुपालश्यामको भुजापकरिगहिलीन्होजी
कहति यशोदहि देखहु आई बहुत रोष तुम कीन्होजी ॥
उरहन देत सदा रिशमानो अब अपनो सुतचीन्होंजी ॥
वही उरहनो नित्य कहतिसो आज सत्य करदीन्होजी ॥ १ ॥
बांहपकरिकै आज श्यामको मैं तुमरे ढिग ल्याईजी ॥
हरि भेटे यशुमति ढिंग खेलत ग्वालिन अचरज पाईजी ॥
यशुमति सुनि ग्वालिनकी वाणी देखति सुतको आईजी ॥
देखि यशोमति अति रिसयानी ह्वैगई सुता पराईजी ॥ २ ॥
दोहा—तेरे आँखि न मतिहिये, बदन देखि पहिचान ॥
देखहु री याकी गती, कन्याको कहकान्ह ॥
चौबोला—कन्याको कह कान्ह गही तू बांह कौनको ल्याईजी ॥

खेलत मेरे धाम कन्हाई कहति कहा तू आईजी ॥
रही बाल हरिको मुख जोई समुझि मनहिं पछिताईजी ॥
बांह पकरिमैं घरते ल्याई कीन्हे चरित कन्हाईजी ॥ १ ॥
जातबने न कछू कहि आवै रही ग्वालि सकुचाईजी ॥
महरि कहति चलिजाहु यहां ते बात तिहारीपाईजी ॥
हरिके चरित कहा कोउ जाने ग्वालिन मन मुसकाईजी ॥
हरिते हारि चली गृह ग्वाली जीते श्याम कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—बहुरि गये इक ग्वालि घर, मन मोहन घनश्याम ॥
सखन सहित हरषित भये, सूनो पायो धाम ॥

चौबोला—सूनो पायो धाम हरीने चोरी माखन खायोजी ॥
भाजन डारे फोरि दही सब भूमीपर ढरकायोजी ॥
सोवत लरिकन चोंथि जगाय्रो मही छिरकडरायोजी ॥
बहुत दिननको चिकनो चोखो बड़ो मांट लखि पायोजी ॥ १ ॥
सोऊ फोरि टूक करडारे हँसि निकसे रंग भीनेजी ॥
आय गई ग्वालिन तिहिं काला निकसत हरिको चीनेजी ॥
रोवत बाल महीसों बोरे मांट टूक कर दीनेजी ॥
भुजा पकरि लेजाय महरि ढिंग हरिको ठाढे कीनेजी ॥ २ ॥

दोहा—कहति ग्वालिनी रिसभरी, सुनहु महरि ममबात ॥
बिन त्यागे नहिं पतरहै, अब हम ब्रज तजिजात ॥

चौबोला—अब हम ब्रज ततिजात मेरे घर कैसो हाल मचायोजी
सुनहु महरि लक्षण सुत केरे कहा अनरीति सिखायोजी ॥
माखन खाय मही ढरकायो लरिकन चोंथि जगायोजी ॥
बासन फोरि धरे सब घरके पूत अनोखो जायोजी ॥ १ ॥
घीको माट युगनको राख्यो सोऊ फोरि बहायोजी ॥
चलो दिखाऊं घरको हाला बरजहु अपनो जायोजी ॥

करत फिरत उतपात काहिको यशुमाति सुत समुझायोजी ॥
नित उठ उरहन देत ग्वालिनी कहत सोई मन भायोजी ॥२॥
दोहा–चोर नाम प्रगटाइयो, बड़े बापके पूत ॥
नाम धरावत तातको, उपज्यो पूत सपूत ॥
चौबोला–उपज्यो पूत सपूत श्यामको यशुमति बहु समुझायोजी
भय समेत मातासों बोले नैन नीरभर आयोजी ॥
मेरे ख्याल परी हैं सगरी झूंठहि नाम लगायोजी ॥
यशुमाति रोवत देखि श्यामको वदन पोंछि उरलायोजी ॥१॥
कहाति सबै युवतिन यह भावै नित उठ उरहन ल्यावैजी ॥
झूठहि कहि कहि मोहिं सुनावें मेरो बाल खिजावैजी ॥
कबहिं जात तेरे दरवाजे कब तेरे माखन खावैजी ॥
धनमाती इतराती डोलै तोहिं लाज नाहिं आवैजी ॥ २ ॥
दोहा–मेरो कान्हा तनक सों, ताहि रुवावाति आय ॥
मोघर सब प्रभुको दियो, कब तेरे घर जाय ॥
चौबोला–कब तेरे घर जाय कहा भयो घरहि गयो बिन जानीजी
छुयो तनक दधि बालक भोरे कहा इतनी रिस आनीजी ॥
ग्वालिन सुनि यशुमतिकी बानी तुम उलटी रिस मानीजी ॥
नित उठि होय जासुकी हानी कहै तुमहिं नँदरानीजी ॥ १ ॥
लेहु आपनो गाम महारि यह तुम कछु औरहि लाईजी ॥
जहां बसे न रहत पत अपनी तजन कह्यो सो ठाईजी ॥
पूताहि देत पठाय भडहाई करत घरन घर माईजी ॥
कोबासिये ऐसे नगर अब उरहन देत रिसाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सखन भीर लेजात घर, आप खाय सोखाय ॥
जो कछु गोरस घर रहै, सो सब देत ढुराय ॥
चौपाई–सो सब देत ढुराय कहांलौं सहैं नित्यकी हानीजी ॥

कबलौं करैं नंदकी कानी बहुत अचकरी ठानीजी ॥
इक दिन मेरे मंदिर आयो देखत बदन दुरानीजी ॥
जब मैं सन्मुख पकरन धाई तबके गुणन बखानीजी ॥
भाजरह्यो दुरि देखत जाई मैं पौढी घर माईजी ॥
हरे हरे आये सिरहाने चोटी बांधि पराईजी ॥
सुन मैयायाके गुण मोसों झूंठ कहत तोहिं आईजी ॥
खेलतते मोहिं लियो बुलाई दधिकी चेंटि कढाईजी ॥ २ ॥

दोहा–टहल करौं याके सदन, यह पति संग सोजाय ॥
सुनत वचन यशुमति हँसी, ग्वालिन रहीलजाय ॥

चौबोला–ग्वालिन रही लजाय महरिसों कहत मनाहिं सकुचावैजी
हैं भोरे कै श्याने मोहन कैसे वैन सुनावैजी ॥
करत फिरत उतपात घरन घर दूध दही ढरकावैजी ॥
नित उठ खेलत फागसि मोहन गरियावत न लजावैजी ॥ १ ॥
बाहर तरुण किसोर लखावै वचन कहत मन भायोजी ॥
इहां होत शिशु भोर देखि हम यह अचरज कछु पायोजी ॥
योंकहि गई ग्वालिनी धामहिं यशुमति सुत समुझायोजी ॥
घर गोरस तेरे बहुतेरो तू कत खात परायोजी ॥ २ ॥

दोहा–लघु दीरघ जानत नहीं, झूंठहि झगरति आय ॥
दूध दही तेरे घनो, सो तू क्योंनहिं खाय ॥

चौबोला–सोतूक्योंनाहिंखाय कैहतिकत माखन खात चुराईजी॥
छांडि देहु अब यह लरिकाई बरजति यशुमति माईजी ॥
यों कहि जननी कंठ लगायो हरषे श्याम कन्हाईजी ॥
खेलन गये बहुरि नँदलाला किये ख्याल सोइ जाईजी ॥ १ ॥
अपर ग्वालि उरहनलै आई यशुमति पर रिसहाईजी ॥
तेरेकान्ह मेरो माखन खायो सखनसहित अभिजाईजी ॥

यमुना गई भरनमें पानी सूने घरकोउनांईजी ॥
गयो भवन में खोलि किवारी माखन लीनों खाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बारेकद्दै बरजोघनो, मानतनाहिं कन्हाय ॥
कीन्हो अतिही लाडिलो, बहुतिकलाडलडाय ॥

चौबोला–बहुतिकलाडलडाय यशोदा पूतअनोखोजायोजी ॥
सुनि ग्वालिनके बैन यशोमति पुनि हरिको समुझायोजी ॥
लैसटिया दिखराय कहत भई सीखतनाहिं सिखायोजी ॥
मेरे रहत जहां तहां ढरको माखन खात परायोजी ॥ १ ॥
नित नित मथियत सहँसमथानी ल्यो माखन मनभायोजी ॥
कितने अहिर जियत घर मेरे बेच खात जिन चायोजी ॥
पूत कहावत नंद महरको चोरहि नाम धरायोजी ॥
मैया मैं माखन नहिं खायो सखन वदन लपटायोजी ॥ २ ॥

दोहा–भोजन अति ऊंचेधरे, मनमें सोच विचार ॥
मैं यहनान्हों हाथसों, किहिंविधि लियो उतार ॥

चौबोला–कहिविधिलियोउतार दधिमुख पोछतकहतकन्हाईजी
दोना पाछे पीठ दुरायो कहत वचन भयपाईजी ॥
डारि सांटि यशुमति मुसिकाई लाये उर सुखदाईजी ॥
बालविनोदँ मोद मन मोह्यो निरखि वदन हरषाईजी ॥ १ ॥
भक्ताधीन वेदयश गावै भक्त प्रताप बतायोजी ॥
यशुमतिको सुख निरखि अगाधा ब्रह्म समादि भुलायोजी ॥
धनि ब्रजवासी धनि ब्रजगैया धनि धनि भाग्य सुहायोजी ॥
जिनको माखन चोर हरीने नित उठ घर घर खायोजी ॥ २ ॥

दोहा–ब्रज चरित्र हरिको निरखि, रहे सकल सुरभूल ॥
धन्य धन्य ब्रज धन्य कहि, हरषित बरसहिं फूल ॥

१ दुलारा। २ हज़ार। ३ क्रीडा।

चौबोला—हरषित बरसहिं फूल कहति इक आई औरहि गोरीजी
सुनहु यशोमति सुतकी करनी करत हरी बरजोरीजी ॥
माखन खाय मही ढरकायो भाजे भाजन फोरीजी ॥
सखा संग कीने इक ठोरी फिरत सांकरी खोरीजी ॥ १ ॥
बाट घाट कोउ चलन न पावै दै दै गारि बुलावैजी ॥
कहां लगि कीजे नित उठ झगरो गोरस वचनहिं पावैजी ॥
ऐसी विधि बसिये ब्रजकोरी घर घर सोर मचावैजी ॥
सुनत गोपिका की रिस बानी नँदरानी समुझावैजी ॥ २ ॥

दोहा—बकत बकत तोसों थकी, नेकहु नाहिं डरात ॥
षटरस सब घर में धरे, सो तू क्यों नाहिं खात ॥

चौबोला—सो तू क्यों नहिं खात घरहि घर चोरीको किमजावैजी।
देत उरहनो ग्वालि सदाई कहति सोई मनभावैजी ॥
मोको कृपण कहति सब आई सुतहू नाहिं अघावैजी ॥
सुनि सुनि लाजन मरति सदा मैं तू नाहिं नेक डरावैजी ॥ १ ॥
अबतोहिं राखों बांधि ललारे ऐसे वचन सुनावैजी ॥
कहे देत तोसोंरी आली अब तेरे घर आवैजी ॥
मेरी सों याहि मारियो धरिके जब तेरो माखन खावैजी ॥
सांटिन मार करो पहुनाई तू मोहिं भोत खिजावैजी ॥ २ ॥

दोहा—कह्यो अजहुँ तू मानले, तू घर घर मति जाय ॥
जननी रिस लखि श्याम कहि, कहूं न जैहों माय ॥

चौबोला—कहूं न जैहों माय कही यों तुरतहि बाहेर आयेजी ॥
खेलन निकरे नँदकेलाला सखा संग छबिछायेजी ॥
तबहीं ग्वालि और इक आई यशुदहि वचन सुनाईजी ॥
सुनहु महरि सुत भलो पढ़ायो घर घर सोर मचायेजी ॥ १ ॥
मारि भजत काऊके लरिका फरका खोल बहाईजी ॥

काऊके घर करत भव्याई काऊको माखन खाईजी ॥
गारी देत सकुच नहिं माने झगरत मगमें आईजी ॥
और कहा गुण कहूं श्यामके तुमसों कहत लजाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कछु टोनासों पढतहै, जोइ सोइ कहत कन्हाय ॥
ओढत मस्तक पीत पट, दैअंचल मुसक्याय ॥

चौबोला—दैअंचल मुसक्याय यशोदा कहत तुम्हैं सकुचाईजी ॥
तेरो मुख लखि हरि इहां कैसे सकुचि तनकह्वैजाईजी ॥
नेक दिखावहु आंखि अबहिंते ऐसे ढंग भले नाईजी ॥
कवलगिराखें कान तुम्हारी मानत नाहिं कन्हाईजी ॥ १ ॥
यशुमति सुनि हरिके गुण गाथा रिसकारि सांटिउठाईजी ॥
कहति जो ऐसे रिसमें पाऊं तो अब तुमहिं दिखाईजी ॥
कैसे हाल करौं हरिकेरे लागे तात कन्हाईजी ॥
छांडूं नहीं आज बिनमारे बहुत गये इतराईजी ॥ २ ॥

अथ दांवरी बंधन लीला ॥

दोहा—इहि अंतर आई सखी, बांहगहे हरिल्याइ ॥
भलो महरि सुत जाइयो, चोली हार दिखाइ ॥

चौबोला—चोली हार दिखाइ कह्यो किन नहीं कठिन कारिपायोजी
किन नहिं सुतको लाड़ लडायो तुमहिं अनोखोजायोजी ॥
बरजाति नाहिं न नेक कन्हाई तेरो कछु अधिकायोजी ॥
यशुमति हरिको भुज गहिलीनो कहति सोई ढंग लायोजी॥१॥
हरुवे साँटिया ढ्वैकलगाई बांह पकरि गहिल्याईजी ॥
आज बांधि मेटौं लँगराई को करि लेत सहाईजी ॥
इत उत रजु खोजत नंदरानी भुजा गहे बितताईजी ॥
हरि जननी उर कोपनिहारी मन मन हँसत कन्हाईजी ॥ २ ॥

१ राह। २ देख। ३ उत्पन्न किया। ४ पकड़।

दोहा–अग्नि प्रेरि त्रिभुवन धनी, दियो क्षीर उफनाय ॥
यशुमति लखि ताजि हरिभुजा, लगी सँभारनजाय ॥
चौबोला–लगी सँभारन जाय हरीनें इहिविधि भुजा छुडाईजी ॥
माखन अपने मुख लपटायो गोरस दियो ढराईजी ॥
जानि जननि अभिलाष कन्हाई रिस में रिस उपजाईजी ॥
देखि श्यामके चरित पकरिकै बांधति यशुमति माईजी ॥ १ ॥
गर्बजानि नहिं दाम समाई द्वै अंगुर घटजाईजी ॥
पुनि पुनि यशुमति और मँगाई हरिके छोटी आईजी ॥
देखि यशोमति अति रिसबाढ़ी ग्वालिनि मन पछिताईजी ॥
देखि सखी यशुमति बौरानी बांधति हरिकी बाईजी ॥ २ ॥
दोहा–त्रिभुवन पति जानन नहीं, जिनसब विघ्ननशाय ॥
अखिललोक है उदरमें, बांधति यशुमतिताय ॥
चौबोला-बांधतियशुमतितायब्रह्मशिवसनकादिकमुनिज्ञानीजी।
धरत निरंतर ध्यान दिवस निशि इनहुँ न महिमाजानीजी ॥
जल थल जिनकी ज्योति समानी कहीगर्ग मुनिबानीजी ॥
मुखमें त्रिभुवन दियो दिखाई तहुं परतीत न आनीजी ॥ १ ॥
तिनहिं देखि बांधत नँदरानी सो हरि सुखके कन्दाजी ॥
अचरज कथा नजात बखानी कहति सखिन मिल ब्रन्दाजी ॥
आप बंधावत प्रेम बिवस है भक्तन छोरत फन्दाजी ॥
वदत वेद वाणी विदित यह भक्तवछल नँदनन्दाजी ॥ २ ॥
दोहा–यमलार्जुन सुरति करि, जननी अति रिस जानि ॥
जन हित गये बँधाय प्रभु, दीनबंधु सुखदानि ॥
चौबोला–दीनबंधु सुखदानि मातके मनकी रुचि पहिचानीजी॥
आप बँधायो सारंगपानी भक्तनके सुखदानीजी ॥
बांधों तोहिं सके को छोरी कहति यशोमति रानीजी ॥

हरि लखि वदन नैन जल ढोरे ले रजु ऊखल सानीजी ॥ १ ॥
यह सुनि ब्रज युवती उठि धाई लखि हरिको मुसकावैजी ॥
बहुरि श्याम अब माखन चोरी कोउअ न छोरन पावैजी ॥
ऊखल बांधि यशोमति डोरी मारन साँटिया ल्यावैजी ॥
सांटी देखि ग्वालि पछितानी बिकल भई अकुलावैजी ॥ २ ॥

दोहा—यशुमति सों ग्वालिन कह्यो, सुतपर कहा रिसाय ॥
कहा भयो भोरे बालसों, ढरक गयो महिमाय ॥

चौबोला—ढरक गयो महिमाय हरी हित घर घर दही बहायोजी॥
तू बांधाति हरि भुजा कहारी यह तोहि कौन सिखायोजी ॥
ऐसी तोहिं बूझिये नाईं गोरस हित दुख पायोजी ॥
चूकपरी हमते यह भोरे उरहन आय सुनायोजी ॥ १ ॥
बारबार जोवत मुख तेरो हुचकिन रोवत श्यामाजी ॥
वज्रहुते तेरो हियो यह कठिन अहो नंदबामाजी ॥
छोर उदरते दांवरि हरिपर कत रिस करत निकामाजी ॥
डारि कठिन करसांटि श्यामको लैकिन अपने धामाजी ॥ २ ॥

दोहा—जाहु चली अपने भवन, कीनों ढीठ कन्हाइ ॥
बंधन छोरनको चली, मति बरजो कोउ माइ ॥

चौबोला—माति बरजो कोउ माइ सौंह अपने बाबाकी खाईजी ॥
अब न पत्याऊं श्यामको कबहूं राखों नित अटकाईजी ॥
देखि चुकी मैं इनके ख्यालै उपजे पूत कन्हाईजी ॥
राख्यो पय औटाय देव हित कोरे मांट जमाईजी ॥ १ ॥
जावन दियो न पूजन पाई दीनो भूमि ढुराईजी ॥
तिहिं घर देव पितर कहो काके प्रगटे कुँवर कन्हाईजी ॥
दाधि कारण बांधन सुत दौरी कहति ग्वालि इक आईजी ॥
इतनी रिस बालकपै कीनी यह सिख कौन सिखाईजी ॥ २ ॥

दोहा—जोहै अतिही अचकरो, तऊ कोखको जाय ॥
देखि नेक हरिको बदन, कैसे डरत कन्हाइ ॥
चौबोला—कैसे डरत कन्हाइ सर्व तजि निरखहु यशुमति माईजी
को जाने किहि पुण्य बसाई प्रगटे नँद घर आईजी ॥
कहो जितो माखन मैं ल्याऊं घरते अबही जाईजी ॥
जिहिं कारण कीनी रिस हरिपै सँटिया डाराति नाईजी ॥ १ ॥
देखि डरात तोहिते कैसे हेम कमल जनु छाईजी ॥
वेगि[1] छोर बंधन हठ त्यागी लैउठाय उर लाईजी ॥
माखन मोहिं देत है आनी बड़ि बड़ि बात बनाईजी ॥
मानो मेरे घर कछुनाई तब नाहिं कहत लजाईजी ॥२॥
दोहा—ढोटा तुमहिं बधाइयो, लियो ज्ञान मैं पाय ॥
रिसमें बांह गहाय अरु, दियो उरहनो आय ॥
चौबोला—दियो उरहनो आय सुनी तब बोली अरु ब्रजनारीजी॥
देखहु यशुमति सुतहि निहारी शशि मुख आनँदकारीजी ॥
मुख छवि कोटि मदन बलिहारी साहकि चोर विहारीजी ॥
बालक हरि अबही कहा जानें नाहिंन तरुण मुरारीजी ॥ १ ॥
भ्रमित भ्रमित जो त्रास ताहिते चपल सजलदृग कोरीजी ॥
मनहुँ मीन बंसी बींधे तब करत सलिल[2] झक झोरीजी ॥
छोर उदरते बेगि दाँवरी कहाति और इक गोरीजी ॥
कहारिस करत श्याम पर ऐसी मानहु यशुमति भोरीजी ॥ २ ॥
दोहा—कठिनहियो तेरो अती, कहाति ग्वालि इक आय ॥
ऐसो दधि माखन कहा, जिहिं बांधति हरिलाय ॥
चौबोला-जिहिं बांधति हरिलाय श्यामको शंकर ध्यान लगावैजी
सुर[3] सपने नहिं देखन पावै शेशसहसमुख ध्यावैजी ॥

१ शीघ्र। २ पानी। ३ देवता।

निगमनहूं खोजत नहिं पावै तू दे तारि नचावैजी ॥
घर बैठे तेरे निध आई ताते तू इतरावैजी ॥ १ ॥
काऊको सुत रोवत देखी लेति धाय उरलाईजी ॥
अब ये कित सीखी चतुराई निज सुतसों कठिनाईजी ॥
कहति एक देखहु नंदरानी कबके बँधे कन्हाईजी ॥
गयो क्षुधाते मुख कुम्हलाई अति कोमल सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा—बीतगई युगयाम अब, घाम निकट रहिआय ॥
तू लागी गृह काजको, तोहिं दया नहिंमाय ॥
चौबोला—तोहिं दया नहिं माय यशोदा जाय काज गृहलीनाजी॥
यशुमति नेक न हृदय विचारो कहारोष उरलीनाजी ॥
जलजलोल लोचन सजल हैं भये त्रास ते दीनाजी ॥
चितवत है हरि वदन तिहारो मनमोहन आधीनाजी ॥ १ ॥
केतिक गोरस हानि यशोदा तैं इतनो दुख पायोजी ॥
वार दीजिये प्राण हरीपर गोरस कौन चलायोजी ॥
हरिको देखि सखा इक धायो बलिसों जाय सुनायोजी ॥
अहो राम तुमरो लघु भैया यशुमति बांधि रखायोजी ॥ २ ॥
दोहा—मारयो लरिका काउको, सो तहां जाय पुकारि ॥
बांध्यो हरि छोरत नहीं, सब कहि कहि पचिहारि ॥
चौबोला-सब कहि कहि पचिहरि सोई मैं तुमको आयजनाईजी॥
हलधर सुनत तुरत उठिधाये मात जानि डर पाईजी ॥
हरिहि देखि लोचन भरि आये भलि दोउ भुजा बंधाईजी ॥
ऊखल सों बांधे हरि देखे हलधर कहत सुनाईजी ॥ १ ॥
मैं बरज्यो कइ बेर कन्हाई अजहुँ छांडि लँगराईजी ॥
दोउ करजोर कहतरी मैया क्यों बांध्यो मेरो भाईजी ॥
श्यामहि छोर बांधि बर मोहीं तोहिं कहा कहूं माईजी ॥

ताके भुज मोहिं बँधे दिखाये मेरो प्राण कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—छुवतो और जोनेककहु, ताहि देखतो आय ॥
तू जननी अब कहा कहूं, तोसों नाहिं बसाय ॥

चौबोला—तोसों नाहिं बसाय पुण्यते तेरे वश हरि आयोजी ॥
गोरस हित बांधतहै हरिको तू पहिचान न पायोजी ॥
करन देहु इनकी पहुनाई यशुमति वचन सुनायोजी ॥
माखन खात परायो जाई चोर नाम प्रगटायोजी ॥ १ ॥
तुमही कहो कमी किहिंकेरी नवनिध मोघर माईजी ॥
हों हारी बरजत दिन राती मेरी मानत नाईजी ॥
कहा करों हरि बहुत खिजाई डीठहि भयो कन्हाईजी ॥
मेरो कह्यो तनक नहिं माने अपनी टेक चलाईजी ॥ २ ॥

दोहा—भोर होत उरहन लिये, ब्रज युवती नित आय ॥
घर नहिं रहत क्षणेकहू, जहां तहां सोर मचाय ॥

चौबोला—जहां तहां सोर मचाय तुम हुँ मोहिं दोष देतहो आईजी
कान्हरते तोहिं माखन प्यारो यह तुम नीक सुनाईजी ॥
तोहिं तजों अरु कहूं कौनते को मेरे मान रखाईजी ॥
उरहन देत झूंठ सब तोहीं तेरीसों सुनमाईजी ॥ १ ॥
दधि माखन पय कान्हर कोहै कान्हाकी सब गाईजी ॥
मोऊको बल है कान्हरको तू नहिं जानत माईजी ॥
बलदाऊकी बात सुनी तब यशुमति मन हरषाईजी ॥
जानतहों मैं चरित तुम्हारे एक मते दोउभाईजी ॥ २ ॥

दोहा—हरिहि देखि हलधर हँसे, तुम्हरीगतिको पाय ॥
होत प्रेमवश भक्तके, हाथविकावत आय ॥

चौबोला—हाथविकावतआय तुम्हेंको छोरन बांधन हाराजी ॥

तुम छोरत बांधत संसारा तुम गति अपरम पाराजी ॥
कारण करत करत मनमाने यशुमति नंददुलाराजी ॥
असुर संहारन जनदुखमोचन राजिवनैन उदाराजी ॥ १ ॥
भक्तनके वश रहत सदाई ताते कछुन बसाईजी ॥
हरि मन कहत सदा ये मेरे यमलार्जुन दोउभाईजी ॥
परसि विटप अब देहुँ गिराई इनहित भुज बँधवाईजी ॥
अबहीं आज इन्हें मैं तारों देहों शाप मिटाईजी ॥ २ ॥

दोहा—यह मिसकरि बंधन तजों, मेटों दुख तत्काल ॥
भक्तवत्सल हरिदीनहित, करुणासिंधुकृपाल ॥

चौबोला—करुणासिंधुकृपाल भक्तआधीन वेदयशगायोजी ॥
पावन पतितहिनाम कहावै जन हित तनधरि आयोजी ॥
विहारन प्रभुनिज भक्तनके हित दांवरि आप बँधायोजी ॥
तादिनते दामोदर हरिको प्रगट नाम कहायोजी ॥ १ ॥
जन रंजन भंजन विपतीके नँदनंदन घनश्यामाजी ॥
पाप शाप त्रयताप सकल दुख मेटन जिनको नामाजी ॥
बाहिर छांड़ि श्यामगृह भीतर लगी काज नँदबामाजी ॥
कहत वचन रस रिस लपटाने फिरत बिराने धामाजी ॥२॥

दोहा—षटरस सब घर आपने, सो तनकहु नाहिं खाय ॥
फोरत भाजन काहुके, मारत लरिकन जाय ॥

चौबोला—मारत लरिकन जाय रहो तुमहूँ हलधर चुप धारीजी॥
इनकी मेटन देहु उपाधी करत उपद्रव भारीजी ॥
ऊखल बँधे देखि मन मोहन कहति सकल ब्रजनारीजी ॥
कान्हहुँ ते तोहिं माखन प्यारो तरसत है बनवारीजी ॥ १ ॥
डारि देहु मथनी नँदरानी हरिकी भुजा पिराईजी ॥
दूध दही हरि पै सब वारो जीवन प्राण कन्हाईजी ॥

जाहु सबै तुम युवति सयानी कहति यशोमति माईजी ॥
मैंखीजति लरकाहि गुणकाजे दधिकी कौन चलाईजी ॥ २ ॥
दोहा–युवति चली विरुझाय सब, कहत यशोदहि पोच ॥
मूरख सों कहिये कहा, करत प्रेम वश सोच ॥
चौबोला-करत प्रेम वश सोच कहत चलीं हम हरिपर बलिजाईजी
अति कठोर मानत है नाहीं यशुमति नाम धराईजी ॥
युवती घरन गईं सब जानी तब हरिके मन आईजी ॥
यमलार्जुन पै गये कन्हाई मातकाज अटकाईजी ॥
परसत पात उठे झहराई शब्द अघात सुनाईजी ॥
उखरे मूल सहित अरराई दीने धरणि गिराईजी ॥
भये चकित सब ब्रजके बासी तनुकी सुरत भुलाईजी ॥
कोउ भूमि कोउ तकत अकासा धरि एक त्रास लखाईजी ॥२॥
दोहा–धनदतनय प्रगटतभये, इहि अंतर दोउ भाइ ॥
ऋषि नारदके शापते, भये वृक्ष ब्रज आइ ॥
चौबोला–भये वृक्ष ब्रज आइ हरीके परसत निजगति पाईजी ॥
भये पुनीत मिटी जड़ताई सुखित भये दोउ भाईजी ॥
तिन्हें कृपालु अनुग्रहकीनी चारि भुजा दरशाईजी ॥
देखि दरश अति पुलकि शरीरा परे चरणमें आईजी ॥ १ ॥
बार बार पद रज शिरधारी स्तुति जोर सुनाईजी ॥
सगुण रूप सुन्दर हरि धारयो भक्तनकेहित आईजी ॥
जो स्वरूप निगमागम गायो पार कोऊ नाहिं पाईजी ॥
सो धनि गोकुल प्रगटे आई धनि यशुमति उरलाईजी ॥ २ ॥
दोहा–धनि ब्रज गोपी गोपगण, धनि माखन धनि गाय ॥
धनि लीला गोविंदकी, चोरी माखन खाय ॥
चौबोला–चोरी माखन खाय धन्य सखी उरहन आयसुनायोजी॥

धन्य यशोमति राख्यो बांधी जाहि वेद नहिं पायोजी ॥
धन्य तरु सो जासु ऊखल धन्य सुजन गढिल्यायोजी ॥
धन्य धन्य तृण सो जाकी रजु श्याम भुजन बँधवायोजी ॥ १ ॥
धन्य ऋषी धनि शाप दियो है अती अनुग्रह कीनाजी ॥
जासु शिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ दरश तुम दीनाजी ॥
अब कृपाकरि देहु प्रभुबर रहे चरण लवलीनाजी ॥
जहांजन्महीं कर्मवश तहां एक तुम्हें रति चीनाजी ॥ २ ॥

दोहा—बारबार पदनाय शिर, विनती प्रभुहिसुनाय ॥
प्रेममगन निरखतबदन, हर्षसहित दोउभाय ॥

चौबोला—हर्ष सहित दोउभाय साधुकहिभक्तिदान तिनपाईजी
हर्ष गये निज पुर दोउभाई विदाकिये सुखदाईजी ॥
वृक्ष शब्द सुनि यशुमति धाई लखे न कुँवर कन्हाईजी ॥
परे विटप महिलखि अकुलाई श्याम चपे तरु जाईजी ॥
बांधे हरि मैं परम अभागी आरत महरि पुकारीजी ॥
सुनत सोर ब्रजजन उठधाये आये नंददुवारीजी ॥
देखिगिरे तरुबरहि डराने ढूँढत श्यामहिं भारीजी ॥
गिरेकवन विधि विटप अपारा रहे विचार विचारीजी ॥ २ ॥

दोहा—लखे बीच दोउ तरुन हरि, ऊखलसों लपटाय ॥
धाय लिये भुजछोरके, ब्रजयुवती उरलाय ॥

चौबोला—ब्रजयुवती उरलाय कहतिसब बडभागीनंदराईजी ॥
यशुमति हू अति भागबड़ेरी बच्यो श्याम सुखदाईजी ॥
कबहूँ बांधत मारत कबहूं दोष देत सब आईजी ॥
नैननीर भरि दौरि यशोदा लिये श्याम उरलाईजी ॥ १ ॥
जरहु सो रिस जिन तुमको बांध्यो कहति यशोमति माईजी ॥
जरहु हाथ जिन जेवरि सांधी मेरे प्राण कन्हाईजी ॥

नंद मोहिं कहिहैं कहा आजु देखि वृक्ष तब आईजी॥
कुशल रहौ अब भ्रात दोऊ तुम मैं ले मरहुँ बलाईजी॥ २॥
दोहा—अति सभीत उर मातके, रहे श्याम लपटाय॥
यशुमति मन पछितात अति, बार बार बलिजाय॥
चौबोला—बार बार बलिजाय युवति सब लैलै उरसोंलाईजी॥
निरखि वदन तन मन सुखपावै आनँद उर न समाईजी॥
कैसे बच्यो अगम तरुमाहीं यह कहि कहि पछिताईजी॥
बड़ी आयु है हरिकी आली विधि करलेतसहाईजी॥ १॥
प्रथम पूतना मारन आई पय पीवतहि नशाईजी॥
तृणावर्त लै गयो उड़ाई गिरचो शिलापर आईजी॥
कागासुर आवत नहिं जान्यो भज्यो जीवलैजाईजी॥
शकटासुर पलना ढिग आयो तिहिंका दियो गिराईजी॥ २॥
दोहा—कौन कौन करवर टरी, ऊखल बांधे माय॥
बहुते उबरचो आजु हरि, गिरे वृक्ष भहराय॥
चौबोला—गिरे वृक्ष भहराय सबहिमिल सोचरहे मनमाईजी॥
पुण्य नंदके बच्यो कन्हाई कीनी विधिहि सहाईजी॥
भुजपर बंधन चिह्न निहारी युवति कहत सब आईजी॥
ये गुण हैं सब यशुमति तेरे सकुचि महर पछिताईजी॥ १॥
तबहिं नंद आये घर अपने दोउ तरु गिरे निहारीजी॥
श्याम चपत बाचे सुनि ये तब देत महरिको गारीजी॥
बांधत है बिन काजहि मेरे हरिबारे सुख मारीजी॥
कुशल करी विधि आज बचायो गिरे वृक्ष दोऊ भारीजी॥ २॥
दोहा—तबहिं तात कहि धाय हरि, लिये नंद सुख पाय॥
प्रेम पुलक लोचन भरे, चूम वदन उरलाय॥
चौबोला—चूम वदन उरलाय लाल मेरे पर तन मन वारीजी॥

काहेको बांध्यो महतारी बिधना करवर टारीजी ॥
कैसे गिरे वृक्ष अति भारी चली न तनक बयारीजी ॥
बारबार सोचत नँदराई तैं कछु लख्यो मुरारीजी ॥ १ ॥
श्याम कह्यो मैं कछू न देख्यों रह्योमैं ओट छिपाईजी ॥
कहत नंद हरि वदन निहारी कीनी विधिहि सहाईजी ॥
द्विज चरणन लैलै सुतनायो दीनी बहुतिक गाईजी ॥
देहिं अशीश विप्र सुखपाई सुनि हरषे नँदराईजी ॥ २ ॥

दोहा–गये श्याम जननी निकट, हर्षि लिये उरलाइ ॥
काको धौं मुख देखियो, भूखो रह्यो कन्हाइ ॥

चौबोला–भूखो रह्यो कन्हाइ भोरही उरहन ल्याई ग्वारीजी ॥
ये सब कियो पसारो उनहीं दुख पायो सुत भारीजी ॥
पहिले कह्यो रोहिणीसों तुम करो तुरत जिवनारीजी ॥
ग्वाल बाल सब बोललिये तब बैठे श्याम मुरारीजी ॥ १ ॥
भूख लगी मोको बहुतेरी वेगि ल्याव री माईजी ॥
आज न खायो प्रात यशोदा योंकहि मन हरषाईजी ॥
रोहिणि रही चितै यशुमति तन शिर धुनि धुनि पछिताईजी ॥
परसहु हरिहि बिलंब न लावो देवहु वेगि खवाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बहु व्यंजन पकवान अति, को कबि बरणेपार ॥
श्याम सखा हलधर सहित, जेवत नंदकुमार ॥

चौबोला–जेवत नंदकुमार जोइ जोइ व्यंजन जननी ल्याईजी ॥
तनक तनक मोहन सब चाखत बलिको बांटत जाईजी ॥
श्याम कह्यो अब मात अघान्यो सुनतहि जल लैआईजी ॥
अचवन करि अचये दोउ भाई सुख पायो दोउ माईजी ॥ १ ॥
सहित सुगंध पान हरि लीने ग्वालन बांट खवावैजी ॥
भ्राता सहित आप हरिखाये अधर अरुण छबि छावैजी ॥

निरखत बदन मुकुरके माई बिहारन बलि बलि जावैजी ॥
भोजन करत भयो सुखजेतो शारद पार न पावैजी ॥ २ ॥
दोहा—जो सुखहै नँद भवनमें, सो न कहूं सुख आन ॥
सुख यशुमति अरु नंदको, कोकबि सकै बखान ॥
चौबोला-कोकबि सकै बखान सुखहिकी खान हरी तहां आयोजी
कोटि ब्रह्मांड कोटि सो इक इक रोम विराट सुहायोजी ॥
सो अपने भुजदंड हर्षिकै यशुमति गोद खिलायोजी ॥
अवतुम जिनकहुँ जाउ लालरे यशुमतियों समुझायोजी ॥ १ ॥
अपनेहीं आंगन में खेलो जननी वचन सुनावैजी ॥
कहत चोर ब्रज बनितातोही सुनत लाज मोहिं आवैजी ॥
तब बांधति मारतिमैं तोहीं यह कहि कहि समुझावैजी ॥
हलधर आज कहतहो मोहीं झूठहिनाम लगावैजी ॥ २ ॥
दोहा—चोरनामनहिं फिरतअब, कहाति ग्वालिइकआय ॥
मैं काके चोरीगयो, झूंठ कहत तोहिं माय ॥
चौबोला—झूंठ कहत तोहिंमाय जबहिमैं खेलों बाहिर जाईजी ॥
चितै रहत सब मेरी धाई तब मोहिंलेत बुलाईजी ॥
चूम वदन उरसों मोहिंलावैं अपने घरके माईजी ॥
माखन मोहिं खवावत निजकर आपुन विधिहिमनाईजी ॥ १ ॥
देखति जबहिं लेत मोहिं टेरी कहुं तेरी सौं खाईजी ॥
यशुमति निरख वदन मुसकानी उनकि बात मैं पाईजी ॥
टेरलेत सब सखा तुम्हारे अरु बोलहु बलभाईजी ॥
सुखदीजे मेरे नैननको खेलहु घर अँगनाईजी ॥ २ ॥
दोहा—बोललिये हलधर सखा, सुनताहि आये धाय ॥
कहत सबनसोंमुदित हरि, खेलहिं आंखमुदाय ॥
चौबोला—खेलहिं आंख मुँदाय कह्योबलि कापैआंखिमुदाईजी॥

हर्षितकरचो हरिजनानि यशोदे सुनि सबके मन आईजी ॥
हरि अपनी तब आंखि मुँदाई जहां तहां रहे लुकाईजी ॥
कानि लागि जननी समुझाये हैं घरमें बलि भाईजी ॥ १ ॥
श्रीदामाको चोर बनैहौं आवनदो बलभाईजी ॥
इत उतते सब बालक आये छुवत यशोदहि धाईजी ॥
श्याम छुवनके कारण धावत छुवन कोऊ नाहिं पाईजी ॥
धाये सुबल छुवन तब श्यामा श्रीदामा छुयो जाईजी ॥ २ ॥

दोहा–छुवो श्रीदामा श्याम धरि, ल्याये जननी बोर ॥
हँसि बोले सबरे सखा, भयो श्रीदामा चोर ॥

चौबोला–भयो श्रीदामा चोर सुनी तब यशुमति मन हरषावेजी
जीत्यो मेरो पूत कन्हैया यह कहि सबम सुनावैजी ॥
जाकी माया जगत खिलावै ब्रह्मा पार न पावेजी ॥
ताहि यशोदा खेल खिलावै बालक जिमि फुसलावेजी ॥ १ ॥
पंच तत्त्व चोखान लोकत्रय बसत जासु उरमाईजी ॥
सो बालक ह्वै खेलत है हरि यशुदाके घर आईजी ॥
ज्योति रूप जगधाम हरीसो दुर्लभ जप तप पाईजी ॥
धनि सो ब्रजके लोग हरीको जानत बाल कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा–कहति भई यशुमति महरि, भई लाल अब रात ॥
करहु बियारू अब कछू, बहुरि खेलियो प्रात ॥

चौबोला-बहुरि खेलियो प्रात कह्यो हरि मोको रुचि नाहिं माईजी
तू कहि भोजन कहा बनायो सो सब कहि समुझाईजी ॥
बेसन मिली कनककी पूरी कोमल उज्ज्वल ताईजी ॥
रोहिणि तुम्हरे हेतु कन्हाई ताती तुरत बनाईजी ॥ १ ॥
निबुआ आम करील अथानो जासों रुची तुम्हारीजी ॥
मेरे नैननको सुखदीजै करहू बलि सँग ब्यारीजी ॥

तनक तनकधरि कंचन थारी लै आई महतारीजी ॥
श्याम राम मिल करत बियारी रहि दोउ मात निहारीजी॥ २॥
दोहा—खात खात आलस भये, मुखजँभात लखिमाय ॥
जल अचवा मुखधोय तब, बांह पकरि पौढाय ॥
चौबोला—बांहपकरि पौढाय सोवत हरिश्यामराम दोउभाईजी॥
हरुवै पांय पलोटत जननी बोलन देत न काईजी ॥
सोये श्याम सुजान पलँगपर सुखसों रात बिताईजी ॥
बहुरे कलेऊकरन समय हरि प्रात जगाये माईजी ॥ १ ॥
माखन रोटी श्यामसुन्दरको दियो प्रात महतारीजी ॥
मुदित रहत दिन रात यशोदा हरिके चरित निहारीजी ॥
महरि महर बतरात परस्पर रहे बिचार बिचारीजी ॥
जबते जन्म भयो हरिकेरो होत उपद्रव भारीजी ॥ २ ॥

अथ वृन्दावनगमन लीला॥

दोहा—अकस्मात तरुवर[२] गिरे, कीनी विधिहिसहाय ॥
अब गोकुल तजिदीजिये, बसिये अंतहि जाय ॥
चौबोला—बसिये अंतहि जाय नंद सब लीने गोप बुलाईजी ॥
समाचारगये सबन सुनाये सुनत वचन मन भाईजी ॥
सबहीके मनमें यह आई बसिये अंतहि जाईजी ॥
हैइक ठाम बहुत शुभकारी कही नंद समझाईजी ॥ १ ॥
वृन्दावन गोवर्धन पासा जहां गोप सुखपावैंजी ॥
तहँ सबको सब भांति सुपासा वनमें धेनु चरावैंजी ॥
चलबेको शुभ दिवस धरायो यह सबके मन भावैजी ॥
पांच बरषके मदन गुपाला वृन्दावन सब जावैंजी ॥ २ ॥
दोहा—शकट[३] सोंज सब साजकै, गोवर्धन दियो हँकाय ॥

१ सोनेकी थारी। २ वृक्ष-यमलार्ज्जुन। ३ गाड़ा।

चले गोप गोपी सकल, वृन्दावन समुदाय ॥
चौबोला–वृन्दावन समुदाय गये सब दिये शकट छुरवाईजी ॥
सबके मनमें बसत सांवरो बसे वृन्दावन आईजी ॥
परम कुशल सब बसत वृन्दावन मगन गोपमन माईजी ॥
चरत हरित तृण जाय बनहिंमें बच्छ सहित सब गाईजी ॥ १ ॥
हलधर धेनु चरावनजावैं लखि हरि अति हरषाईजी ॥
प्रात चले सब गाय चरावन कह्यो मातसों जाईजी ॥
मैंहूं गाय चरावन जैहों डरिहौं बनमें नाईजी ॥
मना मनसुखा हलधर भैया इनके संग चराईजी ॥ २ ॥
दोहा–ग्वालनके संग यमुन तट, वंसीवटकी छाउँ ॥
तेरीसों तहां खेलहों यमुनमैं नहिं न्हाउँ ॥
चौबो०–यमुनामैं नहिं न्हाउँ सुनी तब यशुमति बचन सुनावैजी
देखहु अपनी वोर ललारे यों कहि कहि समुझावैजी ॥
तनक पाँय चलिहो किहि भांती गैया वनमें धावेजी ॥
प्रात जात गैयन लै चारन सांझ होत तब आवेजी ॥ १ ॥
तुम्हरो कमल वदन मुरझैहै रैंगत पांय पिराईजी ॥
तेरी सों मोहिं घाम न लागत भूखहु लागत नाईजी ॥
कह्यो कान्ह मानत नहिं काऊ अपनी टेक चलाईजी ॥
ग्वाल वाल बलराम बनहिंको चले चरावन गाईजी ॥ २ ॥
दोहा–गोधन करि आगे लिये, हेरी टेर सुनाय ॥
सुनत टेर लरिकानकी, गये दौरि रुचिलाय ॥
चौबोला-गये दौरि रुचिलाय इतहि उत खोजति यशुमति माईजी
दृष्टि न परे श्याम बनवारी सोच रही अधिकाईजी ॥
बनतन जान्यो जात कन्हाई टेरति पाछे धाईजी ॥
जात चले गायन सँग धावत बालिको टेरत जाईजी ॥ १ ॥

पाछे जननी आवत जानी फिर चितये भय पाईजी ॥
हलधर आवत जानि कन्हाई ठाढे भये समुदाईजी ॥
ठाढे भये गई तहां जननी धरी धाय दोउ बाईजी ॥
कह्यो बली सँग जानदे मेरे वेगहि ऐहैं माईजी ॥ २ ॥
दोहा—बलि सों यह जननी कह्यो, देखत रहियोयाय ॥
भ्रात संग वनको गयो, यहै कहति घर आय ॥
चौबोला—यहै कहति घर आय हरीने अपनी टेकचलाईजी ॥
आजजाय देखहिं बनमाई कहा धरचो तिहिं ठाईजी ॥
माखन रोटी अरु जलझारी शीतल छाक बनाईजी ॥
दई वेगही ग्वाल संगले यशुमति वनहिं पठाईजी ॥ १ ॥
पंच सुधारस कल्पतरुः है चिन्तामणि सुरगाईजी ॥
खात छाकसो ग्वालनके सँग यह हरिके मन आईजी ॥
वृंदावन खेलत नँदलाला रहे परम सुखपाईजी ॥
जहां तहां ग्वालन सँग डोलत कहत सुनहु बलि भाईजी ॥ २ ॥
दोहा—नितप्राति ल्याहु लिवाय मोहि, तुमसंगचारनगाय ॥
मैं यहां पायो बहुत सुख, आवनदेत न माय ॥
चौबोला—आवनदेत नमाय कह्यो तुम तब मोहि पठयो माईजी॥
कालि कवन विधि आवन पैहों कहत तुम्हें समुझाईजी ॥
सोवत बोल लीजियो मोहीं नंदकि सोंह दिवाईजी ॥
पुनि पुनि विनय करत हरि बलिसों सखनसमेत सुनाईजी॥१॥
संध्या समय निकट अब आई घरको चलहु कन्हाईजी ॥
गैयन घेर करी इकठोरी चले सदन समुदाईजी ॥
ग्वालन संग बनहिंते मोहन आवत धेनु चराईजी ॥
जिहिं जिहिं भांति ग्वाल मुखभाषत सुनत सोहरि मनलाईजी२॥
दोहा—मोर मुकुट बनमालउर, कटिपटपीतसुहाय ॥

गोपदरजछबि बदन पर, आवत गायचराय ॥
चौबोला–आवत गाय चराय बदनपर छूटी अलक सुहावैजी ॥
नंदसुवन ब्रज प्राण धनू हरि सखन सहित घर आवैजी ॥
देखत नंद यशोदा ठाढे ब्रज तिय लखि हरषावैजी ॥
गायन संग श्याम जब आये जननी बलि बलि जावैजी ॥ १ ॥
आज गयो हरि गाय चरावन मैं बलि लघु लघुपायोजी ॥
तुम्हैं देखि मैं अति सुख पायो मो कारण कछु ल्यायोजी ॥
आंचर सों सब अंगरज झारी बदन पोंछि उरलायेजी ॥
माखन रोटी अरु मधु मेवा खाउ सोई मन भायेजी ॥ २ ॥
दोहा–दिय जिमाय दोऊ भ्रात जब, तब जननी बलिजाय॥
कहत मातसों हँसि हरी, नितहि चरैहोंगाय ॥
चौबोला–नितहि चरैहौं गाय मैयामैं बनमें अति सुख पाऊंजी॥
तेरे कहे घरहि नहिं रहिहौं नित प्रति बनको जाऊंजी ॥
ग्वाल बाल गायनके संगमें नेकहु नांहिं डराऊंजी ॥
जागत रहिहौं कहत कन्हाई सौंह नंदकी खाऊंजी ॥ १ ॥
सोय रहो तुम श्याम सुजाना कहति मात पुचकारीजी ॥
प्रातहि जान कहतहो बनको मैं तुमपर बलिहारीजी ॥
प्रात देन बनजानं कह्यो जब सोये श्याम मुरारीजी ॥
श्रमित जान बन गवन हरीके दाबत पग महतारीजी ॥ २ ॥
दोहा–ज्यों त्यों हरि मन बोध करि, सोय रहे अलसाइ ॥
सांझहिते लागे कहन, प्रात होत बनजाइ ॥
चौबोला–प्रात होत बन जाइ आज बलि संग ले गये लिवाईजी॥
अब तो सोय रह्यो कहि ऐसे प्रात होत बन जाईजी ॥
नंद कहत बलिके संग जावे आवन दे फिर धाईजी ॥
भोर होत यशुमति कहि प्यारे जागहु कुवँर कन्हाईजी ॥ १ ॥

शशि[1] मलीन रविकिरण[2] प्रकासी उडुगण[3] द्युति[4] मुरझाईजी ॥
सुनहु शब्द बोलत खगनाना खोलहु नैननिकाईजी ॥
सुनत श्याम जननीकी बानी जाग उठे सुखदाईजी ॥
ल्याई माखन रोटी मैया खावहु कुँवर कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा—बाल सखा टेरत खरे, आये तबके द्वार ॥
खेलहु ब्रज भीतर हरी, दूरि जाहुजिन बहार ॥
चौबोला—दूरि जाहु जिन बहार कह्यो उत टेरउठे बलि भाईजी ॥
ग्वाल बाल जावत सब बनको आवहु धाय कन्हाईजी ॥
श्याम जोर दोउ हाथ मातसों हाहा करि कह्यो माईजी ॥
जै हों ग्वालन साथ चरावन वृन्दावन मैं गाईजी ॥ १ ॥
जैहों गाय चरावन मैया टेरत हैं बलभाईजी ॥
वनफल तोरि देत हैं मोहीं आपुन घेरत गाईंजी ॥
जै हौं और ग्वाल संग नाहीं वनमें मोहिं खिजाईजी ॥
मैं अपने दाऊ संग रहिहौं देखि बनहिं सुख पाईजी ॥ २ ॥
दोहा—आगे दे ल्यावत मोहिं, बनते बलिरी माय ॥
यशुमति बलिको टेर कहो, हरिके गुण समुझाय ॥
चौबोला—हरिके गुण समुझाय कहे तब बोले हलधर भाईजी॥
जानदेहि मोसंग कन्हाई तू किमि बरजति माईजी ॥
तू काहे डरपत मन माहीं जान देति क्यों नाईजी ॥
हँसी महरि सुनि बलिकी बानी जावहु संग लिवाईजी ॥ १ ॥
तुमहूं कहत चारुके रुखकी मैं तुम्हरी बलिजाईजी ॥
अति आनंद भयो हरि धायो गये खिरक दोउ भाईजी ॥
धाय धाय भेटत ग्वालनसों उर अति हरष बढाईजी ॥
पठयो मैया मोहिं बनहिंको चलहिं चरावन गाईजी ॥ २ ॥

[1] चन्द्र। [2] सूर्य्य। [3] नक्षत्र। [4] प्रकाश।

दोहा–चलहु श्याम वृन्दाविपिन, कहत सखा सुखपाय ॥
यमुनाके तट खेलिहैं, बंसीबटकी छांय ॥
चौबोला–बंसीबटकी छांय मिले सब गाय चरावन जावैजी ॥
सखा संग सोहत मनभावन करत सोई मन आवैजी ॥
ग्वाल बाल सब कछुक सयाने हरिहि अयान लखावैजी ॥
गाय बच्छ अरु गोपनके सुत तिन माधि श्याम सुहावैजी ॥ १ ॥
छोंडि कहूं जिन जावहु मोहन कहत सखा समुझाईजी ॥
वृन्दाबन अति सघन निवासा जैहो भूलि कन्हाईजी ॥
सुनत श्याम घन तिनकी वाणी हँसे मनहिं मन माईजी ॥
बनहिं डरात बहुत मैं भैया संग तजो कहुँ नांईजी ॥ २ ॥
दोहा–खेलत हरिसंग सखनके, हरष बढाये जात ॥
गावत कोउ नाचत कोऊ, कूदत कोउ हरषात ॥
चौबो०-कूदत कोउ हरषात देखि हरि निजमनअति सुखपायेजी
हँसत सखनसों दैगलबांहीं आनँद उर न समायेजी ॥
आज यशोमति हरषपठायो भली करी मोहिंल्यायेजी ॥
इहि विधि गोधनलै सब ग्वालन यमुनातट पहुँचायेजी ॥ १ ॥
दई धेनु बगराय बनहिंसब चरित हरित तृणजाईजी ॥
गायचरावत नंद सुवन हरि ग्वालन संग कन्हाईजी ॥
उरमुक्तनकी माल विराजत मुकुट किलटकसुहाईजी ॥
हाथलकुटिया लाल हरीके डोलत बनके माईजी ॥ २ ॥

अथ वत्सासुरवध लीला।

दोहा–सखनसहित खेलत हरी, यमुना के तटजाय ॥
वत्सासुरनृपकंसने, दीनो तुरत पठाय ॥
चौबोला–दीनो तुरत पठायवत्सह्वै बछरनआयसमायोजी ॥
कृष्णताहि आवत ही जान्यो असुर वत्स ह्वै आयोजी ॥

तुमयाको जानत हो भैया बलिको ताहिं दिखायोजी ॥
वह तो असुर वत्स है आयो मारन कंस पठायोजी ॥ १ ॥
हलधर हू देख्यो धर ध्याना साँच कहत तुमभाईजी ॥
बछरा घेरकरो इकठोरी हँसि हँसि कहत कन्हाईजी ॥
ल्याये घेरि वत्स सब ग्वाला वह नाहिं घिरवत आईजी ॥
बारबार हरि बोरनिहारे दाँव तकतमनमाईजी ॥ २ ॥

दोहा—तुमते यह आवत नहीं, मैं याको लेआत ॥
हाथ लकुटियाले हरी, ताके सन्मुखजात ॥

चौबोला—ताके सन्मुख जात हरीको जबहिं जुदोकर पायोजी ॥
मारन चल्यो श्यामको तबहीं प्रेरित काल नियरायोजी ॥
कीनो कोप असुर मन भारी हरिके सन्मुख धायोजी ॥
सुरपुर योग भयो बत्सासुर जबते सन्मुख आयोजी ॥ १ ॥
धाय श्याम पकर्‍यो जब ताको गहि द्वैपांय फिरायोजी ॥
पर्‍यो धरणि तब असुर प्रगट भयो फेर श्वास नहिं आयोजी ॥
अधम असुर तनुत्याग कियो तब सुरपुर ताहि पठायोजी ॥
गगन सहित अनुराग भरे सब सुरन सुमन झरलायोजी ॥

दोहा—चकित कृष्ण बलदेखि तब, धाय परे सब ग्वाल ॥
कहत परम आनँद भरे, धन्य धन्य नँदलाल ॥

चौबोला—धन्य धन्य नँदलाल कहत सब देखितअचरज पाईजी ॥
कहत हरी हम आज बचाये धनि धनि कुँवर कन्हाईजी ॥
यह तौ असुर भयानक आयो हम नहिं जान्योकाईजी ॥
आज सबनिधरिकै यह खातो कौन मारतो याईजी ॥ १ ॥
असुर निकंदन नाम सुनायो हरषित हरि उरलाईजी ॥
कहत ग्वाल तुम धन्य कन्हाई धनि ब्रज प्रगटे आईजी ॥
यह ऐसो तुम अति सुकमारा किहिं विधि भुजा फिराईजी ॥

सबहीके देखत पलमाई मारचो डरे तुम नाईजी ॥ २ ॥

दोहा–अबलों हमजाने नहीं, बडन बडे तुम आय॥
कोउ बनधात लगात कोउ, बनमाला पहिराय ॥

चौबोला–वनमाला पहिराय कोऊ कुंडल शिर मुकट सँभारेजी॥
अलकावलि कोऊ तिलक सुधारे तन मन हरि परवारेजी ॥
जानु भुजनपर कोउ बलिहारे कोऊ वदन निहारेजी ॥
वनफल तोरि धरत कोउ आगे खाहुनीक यह प्यारेजी ॥ १ ॥
इहि विधि हरिको पूजि सबै मिल ग्वाल बाल हरषावेजी ॥
सांझ निकट आवत जब जानी तब सब धेनु बुलावेजी ॥
परममुदित मन सखन सहित हरि असुर मार घर आवेजी ॥
गावत शब्द रसाल निरख छवि विहारन बलि बलि जावेजी॥२॥

दोहा–मोर मुकुट कटि पीतपट, हँसत चलत गति मन्द ॥
सखन मध्य शोभित हरी, जनु उडुगण बिचचन्द ॥

चौबोला-जनु उडुगण बिचचन्द लकुटकर कुंडल परम सुहावेजी
कोटि चंद्र हरि मुखकी सोभा निरखि मदन बलि जावेजी ॥
कुटिल अलक भुजनैन विसाला गोपदरज छविछावेजी ॥
बलि मोहन बनते बनि आवें लखिब्रज जन सुख पावेजी ॥ १॥
सखन सहित हरि धामहिं आयो यशुमति कंठ लगायोजी ॥
कहत ग्वाल सुन यशुमति मैया बडो वीर सुत जायोजी ॥
वत्स रूप इक दानव वनमें बछरन आय समायोजी ॥
हम ताको कछु जान न पायो हरिको मारन धायोजी ॥ २ ॥

दोहा–क्षणहींमें मारचो हरी, पटक्यो ताहि फिराय ॥
भाग्य हमारेते इहां, प्रगटे हरि ब्रजआय ॥

चौबोला–प्रगटे हरि ब्रज़ आय सखन सब विधिवत बात सुनाईजी
यशुमति सब वे पाँयन परि परि बार बार पछिताईजी ॥

भयो महरि उर त्रास कहति यह उबरयो आय कन्हाईजी ॥
मैंन बिगारयो कासु ताहिते कीनी विधिहि सहाईजी ॥ १ ॥
यशुदा सोच करत तू जाको कीनो ख्याल कन्हाईजी ॥
पर्वत तुल्य बिकट तनु ताको सो मारयो क्षणमाईजी ॥
तुम्हरी रक्षाको यह नाई सबको रक्षक आईजी ॥
याके चरण कमल चितलैये बार बार बलिजाईजी ॥ २ ॥

दोहा–ग्वालनके मुखते सुनी, ब्रजजन रहे निहारि ॥
लीला सागर साँवरो, मोहे सब नर नारि ॥

चौबोला–मोहे सब नर नारि मातसों हँसि हरि वचन सुनायोजी॥
देख्यो मैं वृन्दावन जाई निरखि बहुत सुख पायोजी ॥
अति रमणीक भूमि द्रुमनीके कुंज सघन छबि छायोजी ॥
अति कोमल तृण हरित तहां मैं बछर चरा घर आयोजी ॥१॥
सखन संग खेलत वटछांई डरलागत मोहिं नाईजी ॥
मुदित सुनत हरिकी मृदुवानी रोहिणि यशुमति माईजी ॥
मोहिं लियो मन हरि जननीको मधुरे वचन सुनाईजी ॥
बत्सासुरको सोचहियेते मेटि दियो क्षणमाईजी ॥ २ ॥

अथ धेनुदुहन लीला ॥

दोहा–जहां तहां हर्षित गोपगण, लगे दुहन सबगाय ॥
गाय दुहन चाहत सिखन, गये तहां हरिधाय ॥

चौबोला–गये तहां हरि धाय लखे सब धेनु दुहत तब जाईजी॥
कहत मोहिं सिखवो गोपालन दुहिहौं मैं अब गाईजी ॥
धेनु दुहनके काज कन्हाई बैठ गये तिन पाईजी ॥
कैसे दोय पगन अटकावत कैसे लेथन लाईजी ॥ १ ॥
घुटरुन गहँत दोहनी कैसे मोहिंको देहु बताईजी ॥

१ भय। २ ब्रह्मा। ३ सुहावन। ४ वृक्ष। ५ प्रसन्न। ६ पकरत।

केसे धार दूधकी होई सो सब देहु सिखाईजी ॥
कहत ग्वाल तुम सुनहु कन्हाई आज बेर भइ भाईजी ॥
तुमको सिखहैं दुहन सकारे अब कहुँ चोट लगाईजी ॥ २ ॥
दोहा—श्याम कह्यो सब सखनसों, दुहो जिन नंद दुहाइ ॥
टेर लीजियो मोहिं तुम, मैं दुहिहौं निजगाइ ॥
चौबोला—मैंदुहिहौं निजगाइ दुष्ट दल संतनके सुखदाईजी ॥
ठाढे गैयन मांझ कन्हाई टेरति यशुमति माईजी ॥
आवहु कान्ह सांझकी बिरियां ऐसे कहत सुनाईजी ॥
लरिकाई कछु छांडत नाहीं आ सोवहु घर माईजी ॥
आये हरि यह सुनत तुरतही लिये मात अँकवाईजी ॥
लै पौढाये सेजपरमहित अजिर चांदनी छाईजी ॥
कहत कहत कछु बात सोयरहे भये नींदवश आईजी ॥
कहति यशोमति मातसोय रह्यो हरि आंगनके माईजी ॥ २ ॥
दोहा—दोउ जननी भीतर लिये, सेजहि सहित उठाय ॥
अतिहि नींदवश सोरह्यो, कहति यशोमतिमाय ॥
चौबोला—कहति यशोमति माय नेकनहिं बैठताथिरघरमाईजी॥
खेलनमें मन रहत सदाई घरहू आवत नाईजी ॥
रोहिणि कहति हारि गयो खेलत सोवन देहु कन्हाईजी ॥
माताहरुवै पवन डुरावे निरखि वदन बलिजाईजी ॥ १ ॥
प्रात जगावत नंदकिरानी उठहु श्याम सुखदाईजी ॥
शशिमलीन उडुगणद्युतिनाशी कुमुदिन रहिसकुचाईजी ॥
बारबार टेरत सबग्वाला सांझहि सोंह दिवाईजी ॥
रांभाति गाय वच्छ हितलागी होत अबार कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा—आरत वत्स पुकारहीं, दुहत नहीं तुम गाय ॥
जोवत मग यह ग्वाल सब, ठाढे प्रेम बढाय ॥

चौबोला—ठाढे प्रेम बढाय सुनतही तुरत उठे सुखदाईजी ॥
धेनु दुहन सीखन मन चाहत मोहन कुँवर कन्हाईजी ॥
कहत तनकसी देखि दोहनी बेगिल्यावरीमाईजी ॥
जात दोहन सीखनमैं गैया देहैं तात सिखाईजी ॥ १ ॥
रोहिणि तुरत दोहनी ल्याई व्रजवधु देखन आईजी ॥
अटपट आसन बैठ कन्हाई ले गोथन कर माईजी ॥
धार अनतहीं जात निहारी हँसे तात अरु माईजी ॥
चितै चोर चित हरि हँसिलीने बिहारन बलिबलि जाईजी ॥२॥

दोहा—यशुमति अति उत्सव कियो, सो नहिं वरण्यो जाय ॥
विप्रन लिये बुलाय तिन, दई बहूतिक गाय ॥

चौबोला—दई बहूतिक गाय गावति सब मंगल व्रजकी नारीजी
दुही गाय संतन हितकारी हरि जनके दुखहारीजी ॥
बैठे प्रमुदित गोप अथाई मन आनँद नँदभारीजी ॥
लिये गोद सुन्दर घनश्यामा व्रज जीवन बनवारीजी ॥ १ ॥
आयो तहां एक वनज्यारो मोतिनको व्यापारीजी ॥
तिहिं लखि अटके नंदकुमारा देकहि बारहिबारीजी ॥
दीरघ मोल कहो व्यापारी तासों कहत मुरारीजी ॥
कर पर राखिरहे हरि मोती सुनि पुनि ज्योति निहारीजी ॥२॥

अथ मोतीबोवन लीला।

दोहा—लै मोती हरि घरगये, बये अजिर बलवीर ॥
आलबाल थलरोपितहँ पुनि पुनि सींचतनीर ॥

चौबोला—पुनिपुनिसींचतनीरकरतकहा कहतियशोमतिमाईजी
ये करता सबही जग केरे सो यह जानति नाईजी ॥
भये तुरत शाखादल तामे यशुमति आंगन माईजी ॥
ब्रह्मादिक सब करत विचारा फलत न बार लगाईजी ॥ १ ॥

नंदभवन हरि मुक्त जमाये ब्रजजन हार बनावैजी ॥
सब गुण समरथ सब गुणशीला विहारन कहत न आवैजी ॥
क्षणमें जासु प्रगट करिमाया कोटि ब्रह्मांड रचावैजी ॥
नंद अजिर सो ख्याल बनावै ब्रह्मा पार न पावैजी ॥ २ ॥
दोहा—कोउअ न महिमा कहिसकै, निगुण सगुण वपुधार ॥
रचै नाश पालन करै, सो ब्रज करत विहार ॥
चौबोला-सोब्रजकरतविहारविरंचिशिवमुनिजनध्यानलगायोजी
ताहि यशोमति गोद खिलावै भाग्य नजात गिनायोजी ॥
अगम अगोचर लीलाधारी सो वृन्दावन आयोजी ॥
बड़े भाग्य ब्रजबासिन केरे जिन संग हरि सुख पायोजी ॥ १ ॥
धनि धनि ब्रज नर नारि धन्य नँद धन्य यशोदा माईजी ॥
ब्रह्म सच्चिदानंद सो विहरत जिनके आंगन माईजी ॥
धन्य धन्य ब्रज बागवनहिं सब जहां चरावत गाईजी ॥
सकल सुरन शिर मुकुट मणीहरि कहि कहि देव सिहाईजी॥२॥

अथ बकासुरवध लीला ॥

दोहा—प्रात उठे हलधर हरी, गाय चरावन जात ॥
देखति छवि ब्रजसुन्दरी, कहति परस्पर बात ॥
चौबोला—कहति परस्पर बात देखि सखि ब्रजते बनहिं सिधावैजी
वलि मोहन ग्वालन सँग मोहीं सोछवि कहत न आवैजी ॥
रोहिणि सुतछवि गौर यशोदा सुत छवि श्याम सुहावैजी ॥
ओढे नील पीत पटदोऊ लखि छवि मदन लजावैजी ॥ १ ॥
मानहुँ युगल मिले घन दामिन जोरत नात मिलाईजी ॥
शीश मुकुट कुंडल काननमें झलक कपोलन छाईजी ॥
सखन मध्य सोहत नँदलाला मंद हँसन सुखदाईजी ॥
कटि किंकिणि करलकुट सुहावै लखि मन लेत चुराईजी ॥२॥

दोहा–रहीं थकित लखि हरि छबी, सब मिल ब्रजकी बाम ॥
गये बनाहिं हलधर हरी, विहरत वन घनश्याम ॥
चौबोला–विहरत वन घनश्याम बनहिं में फिरत चरावत गाईजी
हलधर श्याम सखा इक ठाईं करत खेल बनमाईजी ॥
करत विहार विविध वन नाना बालकेलि सुखदाईजी ॥
कबहुँक सखन संग मिल गावैं कवहुँक वेणु बजाईजी ॥ १ ॥
धौरी धूमर नाम सुनावै गैयन टेर बुलावैजी ॥
सुन्दर श्याम जलद तनु सोहै कबहुँक मोर नचावैजी ॥
गर्जत मुरली घोर परम आनंदहि जल बरसावैजी ॥
खेलत खेल विविध मनभावन सखन सहित छबि छावैजी ॥२॥
दोहा–तृषित जानि गैयनकह्यो, चलहुयमुनगोपाल ॥
टेरिलेहुसुरभी सकल, सुनताहि ल्यायेग्वाल ॥
चौबोला–सुनतहिल्याये ग्वाल घेरि सब गोधन दिये हँकाईजी॥
ग्वालन गमन यमुनतट कीनों गैयन घेरत जाईजी ॥
तहां बकासुर छलकर आयो माया रूप बनाईजी ॥
एक चोंच भूतलमें लाई एक अकाश समाईजी ॥ १ ॥
मगमें बैठ्यो वदन पसारी देखत ग्वाल डरायेजी ॥
बालकजात हुते जे आगे सो पाछे फिर धायेजी ॥
कहत भये सब हरिसों आई आगे एकबलायेजी ॥
ऐसो देख्यो कबहूं नाहीं नित प्रति बन हम आयेजी ॥ २ ॥
दोहा–आयो बकासुर जानहरि,कहत मनहिं बलबीर ॥
अबहिं याहिमैं मारिहों, चोंचहि डारों चीर ॥
चौबोला–चोंचहि डारों चीर हरीके ऐसे मनमें आईजी ॥
आगे भये कहत सब ग्वाला कित तुम जात कन्हाईजी ॥
बचे केति उतपातते तबहूं मानत हो डर नाईजी ॥

हम बरजत तुम मानत नाई चले जात अतुराईजी ॥ १ ॥
चलहु सकलमिल करिहैं नाशा हरि मुख वचन सुनायोजी ॥
हरिके संगगये सब ग्वाला निकट जाय लखि पायोजी ॥
ताके निकट गये सब जबहीं हरि मुख माहिंउठायोजी ॥
जान्यो असुरकाजमैंकीनो वदन मूँद हरषायोजी ॥ २ ॥

दोहा–ग्वाल पुकारे जाय सब, बलि सों कहत सुनाय ॥
हम बरजत हरि हठ गये, लिये लील बक धाय ॥

चौबोला–लिये लील बक धाय हरीको चरित जानि नहिं पायोजी
उपजी आग असुर मुख माहीं तव मन अति पछितायोजी ॥
लाग्यो जरन भयो अति व्याकुल उगलतही बनि आयोजी ॥
बहुरो पकरनको मुख बायो तब हरि चीर बहायोजी ॥ १ ॥
ग्वालन देखि कहत बलरामा मारयो असुर कन्हाईजी ॥
टेर उठे उत कुँवर कन्हाई आहु सखा सब धाईजी ॥
बक विदारि हरि सखन बुलावत कहत आहु अतुराईजी ॥
चोंच फारि मारयो मैं असुरहि तुमहूं करहु सहाईजी ॥ २ ॥

दोहा–सुनत श्यामके वचनवर, गये सखा सब धाय ॥
पुनि पुनि भेटत पुलकतन, निरखि नैन सुखपाय ॥

चौबोला-निरखि नैन सुखपाय परस्पर कहत सखा सुन प्यारेजी
ये कोऊ ब्रज प्रगटे आई आये भाग्य हमारेजी ॥
इन्हें नाहिं कोउ घात करैया असुरनि मारन हारेजी ॥
जबते इन्हें यशोमति जाये केतिक असुर पछारेजी ॥ १ ॥
तृणा पूतना शकटा मारे तब हते बाल कन्हाईजी ॥
हम देखत वत्सासुर मारयो याकी कौन चलाईजी ॥
इनके गुण कछु कहत न आवे वृथा डरत हम भाईजी ॥
धनि यशुमति जिन इनको जायो धनि हम सखा कहाईजी २॥

दोहा–बकहि मारि सुन्दर हरी, यमुनाके तट आय ॥
सुरभिन नीर पियाय तब, सखन सहित सब न्हाय ॥
चौबो०-सखन सहित सब न्हाय धस्यो वन धात चित्र तन लाईजी
मोर मुकुट माथे धरलीनों संतनके सुखदाईजी ॥
बनमाला रचि सखन बनाई प्रेम सहित पहिराईजी ॥
वन फल मधुर गोप ले आये खावहु कहत कन्हाईजी ॥ १ ॥
बलि मोहन घरको चले आवत जानि सांझकी बेरीजी ॥
लीनी गैंयां घेरि सखन सब मुरलीकी धुनि टेरीजी ॥
चले बजावत बैन सकल मिल ग्वालन गावत हेरीजी ॥
ब्रजजन प्राण अधार साँवरो अंग छबिन की टेरीजी ॥ २ ॥
दोहा–सुनि मुरलीकी टेर सब, धाईं ब्रजकी बाल ॥
कहत परस्पर लखि अली, आवतहैं नँदलाल ॥
चौबोला–आवतहैं नँदलाल नाना रंग सुमनन माल सुहाईजी ॥
श्यामहिये छवि देत बिसाला सो छबि बरनि न जाईजी ॥
मोरपक्ष शिर मुकुट विराजै मुरली टेर सुनाईजी ॥
भ्रुकुटी विकट नीक सुखदाई तिलक रेख छबिछाईजी ॥ १ ॥
कुंडल लोल अलक घुँघुरारी आते छबि कहत न आवैजी ॥
मंद हँसनि घन दामिन जैसे दुरि दुरि पुनि प्रगटावैजी ॥
तन घनश्याम कमल दल नैना बोलत परम सुहावैजी ॥
नटवर रूप श्याम अपने मुख मधुरे सुर कछु गावैजी ॥ २ ॥
दोहा–गुंजमाल चोरत मनहिं, चंदन खौरि सुहाय ॥
या छबिपर बलिजाइये, देख श्याम सुखपाय ॥
चौबोला–देख श्याम सुखपाय हरी हलधर आये दोउ भाईजी ॥
सांझ समय बनते चले आवत आये धेनु चराईजी ॥
वत्स सुरत करि पयश्रव बाढीं रांभतिधाईं गाईंजी ॥

आवत श्याम घरहि अति हरषित कहति यशोमति माईजी॥१॥
इतनी कहत श्याम घर आये दौरि मात उरलायेजी॥
ब्रज लरिका सब तुरतहिधाये शीशमहरि पदनायेजी॥
ऐसो पूत धन्य तुम जायो गुण कछु जात न गायेजी॥
आज सकल मिल धेनु चरावन यमुना तीर सिधायेजी॥२॥

दोहा—तहां असुर बन खगतनूं, बैठ रह्यो मुखबाय॥
एक चोंच महि पर धरी, एक अकास लगाय॥

चौबोला—एक अकास लगाय तहां हम बरजतही हरिधायोजी
ताके मुखमें जाय समायो तब हम अति भयपायोजी॥
अति व्याकुल हम भये निराशा बलिसोंजाय सुनायोजी॥
चोंच फारि तिहि मार गिरायो कैसे बाहिर आयोजी॥१॥
सुनत नंद यशुमति ब्रजनारी हरितन रहे निहारीजी॥
यशुदा कहत कहाकोउ जाने विधना करबरटारीजी॥
नित प्रति होय आनकी आनै होत उपद्रव भारीजी॥
भयो आज कोउ सुकृत हहाई विधिकी गति कछु न्यारीजी॥२॥

दोहा—जन्म भयो है श्यामको, तबते यहै उपाधि॥
कहासरचोहमरेयतन, विधिगतिअगमअगाधि॥

चौबोला-विधिगतिअगमअगाधियशोदाकहतिकहतनहिंआवैजी
विधना सहाय करत है हरिकी को मेरे पछितावैजी॥
प्रेमसलिल लोचन भर आये ले बलाय उरलावैजी॥
मैंबलि जाउँ कहति कछु खावहु तूकत गाय चरावैजी॥१॥
नंदमहरसे पिता तुम्हारे मोसी मात बलिजाईजी॥
खेलत खातरहो अपने घर दधि पकवान मिठाईजी॥
निरखि वदन सुनि. वचन तुम्हारे मेरो हियो सिराईजी॥
बोले मधुर मातसों बानी भक्तनके सुखदाईजी॥२॥

दोहा–मैया बन नहिं जायहैं, ग्वालघिरावत गाय ॥
दौरत पांयपिरात तब, बैठ रहों तरुछाय ॥
चौबोला–बैठरहों तरुछांय नमानें बूझदेखि. बलिभाईजी ॥
देहि आपनी सोंह दिवाई सांच कहत मैं माईजी ॥ २ ॥
यह सुनतहि यशुमाति रिसयानी ग्वालन गारि सुनाईजी ॥
मैं पठवंत लरिकहि बनजाई आवहि मन बहलाईजी ॥ १ ॥
अवहीं मेरो मोहन गैया जानहिं कहा चराईजी ॥
अति बारो मेरो सुत कान्हा मारत ताहि रिगाईजी ॥
कोउ न जानत चरित श्यामके हरि जनके सुखदाईजी ॥
मोहि लियो हरि मन जननीको मधुरे वचन सुनाईजी ॥ २ ॥

अथ चकई भौंरा खेलनकी लीला ॥

दोहा–कछुक खाय सोये हरी, प्रात जगाये माय ॥
कियो कलेऊ तब कछू, जननी सों कह्यो आय ॥
चौबोला–जननी सों कह्यो आय चकइ भौंरा दे कहत मुरारीजी
खेलत रहिहौं व्रजकी खोरी तब बोली महतारीजी ॥
आरेमें राखे कहि दीनो तुमहीं लेहु निकारीजी ॥
ल्याये तुरत निकारि मगन भये सुन्दर रंग निहारीजी ॥ १ ॥
वारवार हरषित मुख भाषे तो बिन राखे कोरीजी ॥
बिहँसि चले फेरत चक डोरी खेलन व्रजकी खोरीजी ॥
जैसेइ आप सखा सब तैसे सुन्दर सब इक जोरीजी ॥
निरखि निरखि छवि गोप किशोरी वारवार तृण तोरीजी ॥२॥
दोहा–सबके मन मोहन बसे, चितवत व्रजकी बाल ॥
सबके मन यह वासना, होंय पती नँदलाल ॥
चौबोला–होंय पती नँदलाल सकल गोपिनके मन यह भाईजी॥

सबके मनकी रुचि पहिचानी भक्तनके सुखदाईजी ॥
कोऊ कौने भाव हरीको रटहि जो मन चित लाईजी ॥
तो प्रगटत ताको हरि तैसे प्रभु त्रिभुवनके राईजी ॥ १ ॥
भक्तवत्सल भगवान हरी सों संतनके सुखदाईजी ॥
नारि पुरुष कोऊ किन होऊ रहत प्रेम बशमाईजी ॥
गोपिनके यह ध्यान सदाई बिसरत इक क्षण नाईजी ॥
हरि उनके मनकी रुचि जानी करत बात मन भाईजी ॥ २ ॥

दोहा–खेलतमें टोकत हरी, मारग रोकत जाय ॥
चकई भौंरा डोरिलै, भूषणसों अरझाय ॥

चौबोला–भूषण सों अरझाय काऊ सो हँसि हँसि वदन फिराईजी
काऊ सों दृग वदन मरोरत काऊ सों मुसकाईजी ॥
अँखियांदे मटकाय हँसत अरु सबको देत हँसाईजी ॥
युवतिनके मन बसे कन्हाई देखे बिन न सुहाईजी ॥ १ ॥
हरिको खेलत माँझ खिजावें गारी गाय सुनावेजी ॥
गेंद उरोजनमाहिं दुरावे यहि विधि अंग छुवावेजी ॥
कंचुकि फारि आपही लेहीं यशुदहि जाय बतावेजी ॥
चलहु तुम्हें बोलत नँदरानी भुजगहि हरिहि डरावेजी ॥ २ ॥

अथ राधाजूके प्रथम मिलनेकी लीला ॥

दोहा–जों ब्रजबनितननेहवश, आनँद घन छबिरास ॥
रसिक पुरंदर सांवरो, ब्रज में करत बिलास ॥

चौबोला-ब्रज में करत बिलास खेलन ब्रज निकसे कुँवर कन्हाईजी
मेघ श्याम तन पीत पिछौरी अति छबि परम सुहाईजी ॥
मोरपंख शिर मुकुट बिराजे कुंडलकी छबि छाईजी ॥
दशनदमक दामिन द्युति थोरी निरखत मदन लजाईजी ॥१॥

गये यमुनके तट मनमोहन संग सखा कोउ नाईजी ॥
औचक दृष्टि परी तहँ राधा रूप गुणन अधिकाईजी ॥
नील वसन तनकी छवि गोरी रोरी भाल लगाईजी ॥
बेनी पीठ ढरत झकझोरी दिन थोरेकी जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—अनुपम छवि लखि छकि रहे, रीझे श्याम कन्हाइ ॥
संगलरिकिनी देखि तब, चितै रहे टकलाइ ॥

चौबोला-चितै रहे टकलाइ नैन नैनन मिलपरी ठगोरीजी ॥
बूझत श्याम कौन तुम गोरी दीसत हो अति भोरीजी ॥
रहत कहां काकी हो बेटी देखि नहीं ब्रज खोरीजी ॥
काहेको हम ब्रजतन आवें खेलत अपनी पोरीजी ॥ १ ॥
सुनत रहत श्रवणनि नँद ढोटा ब्रजके माँहिं सदाईजी ॥
दधि माखन चोरीकर खावत घर घर ब्रजमें जाईजी ॥
तुम्हरो कहा चोर हमलेहैं बिहँसित कह्यो कन्हाईजी ॥
आवहु किन ब्रज मांझ हमारे खेलहु संगनित आईजी ॥ २ ॥

दोहा—पूरब प्रीत नजानहीं, रसिक शिरोमणि नाम ॥
बिहारन भोरी राधिका, भुरे लई घनश्याम ॥

चौबोला-भुरे लई घनश्याम प्रथमहीं प्रीति दुहुन मन मानीजी ॥
गुप्त प्रीति शिशुता प्रगटानी कहत श्याम सुखदानीजी ॥
खेलन कबहुँ हमारे आवो मन में जिन सकुचानीजी ॥
दूर नहीं कछु सदनं हमारो टेरत सुनि हो बानीजी ॥ १ ॥
लीज्यो मोहिं टेर नँद पौरी कान्ह नाम सुन गोरीजी ॥
ताते साथ कीजियत हमहूं दीसत सूधी भोरीजी ॥
तुम्हें बबा वृषभानु दुहाई आवहु हमरी बोरीजी ॥
गैया गिनानि नंद जब ऐहैं तब मिलिहैं तिहिं ठोरीजी ॥ २ ॥

१ माथा। २ जिसकी उपमा नहो। ३ कान। ४ घर।

दोहा–खिरक मांझ मैं पायहों, ऐहों दुहावन गाइ ॥
रसिक शिरोमणि लाड़ली, इम संकेत बुलाइ ॥
चौबोला–इम संकेत बुलाइ हरीकी गूढ बात सुन पाईजी ॥
मनहीं मन प्यारी मुसकाई श्याम हँसे मन माईजी ॥
गुप्त प्रीति परगट नहिं कीनी दोउअन हृदय दुराईजी ॥
मन मोहन अरु प्यारी जावत घरको नैन चलाईजी ॥ १ ॥
मनमें उरझ्यो श्याम सलोनो चली सदन सुकुमारीजी ॥
जानी भई अबार ताहिते मान त्रास अतिभारीजी ॥
कोजैहै खेलन इनके घर कहति सखिनसों प्यारीजी ॥
चलहु वेगि अपने घर आली भैइत बहुत अबारीजी ॥ २ ॥
दोहा–हृदय प्रेम अंतर सुखी, कहत सखिनसों जात ॥
गई भवन कीरति कुँवरि, पूछति तासों मात ॥
चौबोला–पूछति तासों मात अबेलौं कहां अवार लगाईजी ॥
गैया खिरक देखि मैं आई यों जननी समुझाईजी ॥
ऐसे कहि माता बहकाई अंतर बसे कन्हाईजी ॥
बिरह विकल तन गृह न सुहावै श्याम मोहनी लाईजी ॥ १ ॥
चंचल चित्त पुलक तन आवै खान पान नहिं भावैजी ॥
मात पिताको मानति त्रासा नैनानि दरशनचावैजी ॥
कहति दोहनी देरी मैया ऐसे वचन सुनावैजी ॥
घरि इक लगहि जो गाय दुहावत तो तू जिन उत आवैजी॥२॥
दोहा–लई मातसों दोहनी, चली दुहावन गाय ॥
मन अटको नँदलालसों, गई खिरक समुहाय ॥
चौबोला–गई खिरक समुहाय कहतिकव देखों कुँवरकन्हाईजी॥
खिरकमिलन मोसों कहि दीनो लीनो मनहिं चुराईजी ॥
देखे जाय तहां हरि नाहीं भई चकित मन माईजी ॥

कबहुँ कहत कबहूं उत डोलत बोलत मुख कछु नाईजी ॥ १ ॥
देखे नंद संग हरि आवत लखि मन अति हरषाईजी ॥
देखी श्याम राधिका ठाढी लीनी निकट बुलाईजी ॥
कह्यो महर लखि खेलहु दोऊ दूर जाहु कहुँ नाईजी ॥
सुनि वृषभानु सुता इत आई साथ खिलाहु कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—देखतिं रहियो श्याम तन, मारहि जिनको ठगाय ॥
नंद बबाकी बात सुनि, कहति लाडिली आय ॥

चौबोला—कहति लाडिली आय महरदीने मोहिको सँभराईजी॥
राधे बांह गही हँसि हरिकी जान देत कहुँ नाईजी ॥
कहति तुम्हें कहुँ जान न देहों जैहो तौ गहिल्याईजी ॥
मेरी बांह छाँड़दे राधा करत श्याम चतुराईजी ॥ १ ॥
खिजहि महर हम परकहुँ आई सुनहु बात नँदनन्दाजी ॥
तुमरी बाँह न तजों कन्हाई दोउ मन अति आनन्दाजी ॥
परम नागरी कुँवरि राधिका अति नागर ब्रजचन्दाजी ॥
करत आपनी घात दोऊ मिल बँधे प्रेमके फन्दाजी ॥ २ ॥

दोहा—ब्रजचरित्र हित तनुधरे, समुझि पुरातननेह ॥
युगलबिहारी कुंजके, चलन चहत बनगेह ॥

चौबोला—चलन चहत बनगेह कन्हाई दीनी घटाउठाईजी ॥
गरज मेघ बादर तिहिंकाला भूमि चहूं दिश छाईजी ॥
पवन झकोर चली झकझोरी चपला चमक सुहाईजी ॥
ह्वै गइभूमि सकल अँधियारी तैसी तरुकी छाईजी ॥ १ ॥
डरेदेखि अति कुँवर कन्हाई लखि बोले नँदराईजी ॥
कान्है संगलिये घरजारी श्यामघटा झुकिआईजी ॥
लिये बाँह गहि कुँवर कन्हाई चले युगल हरषाईजी ॥
नवल राधिका नवल बिहारी पुलक अंग छबिछाईजी ॥ २ ॥

दोहा—नवलनेह नव रंगमन, नवल कुंज नव भार ॥
नवल सुगंधी तरु सुमन, गुंजतभवेर अपार ॥
चौबोला—गुंजत भवँर अपार सुभगयमुनाजल पवनझकोरेजी॥
उठत श्याम छबि कुंजहिलोरे लखि मन होत न थोरेजी ॥
बनज विपुल वहु रंगसुहावन चारुपुलिन चहुँ वोरेजी ॥
गये युगल तह रसिक रसीले यमुना तट शुभ ठोरैजी ॥ १ ॥
विहरत विविध विलास बनहिंमें युगलरूप छवि छावैजी ॥
गुण गावत मुनि वेद शेश शिव ब्रह्मा पार न पावैजी ॥
बन विहार नँदलाल कियो सो अति शुभ कहत न आवैजी ॥
वेद भेद पावत नहिं जाको कौन कवी सो गावैजी ॥ २ ॥
दोहा—चले सदन हरि कुंजते, प्यारीगेह पठाय ॥
ताकी सारी आपले, दियो पीतपटताय ॥
चौबोला—दियो पीत पटताय बादर सब जहां तहां दिये उड़ाईजी
आये सदन श्याम सुखदाई लखि यशुमति हरषाईजी ॥
ओढे देख शीशपर सारी मनधौं कहति कहां पाईजी ॥
पीत पिछौरी कहां गमाई तब यशुमति मन आईजी ॥ १ ॥
ब्रज युवती भुरये यह जानी आंख पिछानी माईजी ॥
पूँछति हँसि हरिसों नँदरानी तरुणिन बुद्धि सिखाईजी ॥
पीत पिछौरी कितहि बिसारी सारी कहां ते आईजी ॥
जानि लई जननी हरिजानी तब इक बुद्धि उपाईजी ॥ २ ॥
दोहा—गैयांलै यमुना गयो, तहां भराति पनिहारि ॥
बिडुरिगाय जिततित चलीं, भाजिगईं सब नारि ॥
चौबोला—भाजि गईं सब नारिं पिछोरी ले भाजी इक नारीजी ॥
वहुत बचाई बंसी ताकी हौंले भाज्यो सारीजी ॥
मैं पहिंचानत वाय पिछौरी ले भाजी सो ग्वारीजी ॥

घरले आवत जाय मैयामैं ऐसे कहत मुरारीजी ॥ १ ॥
पीताम्बर ताको हरिकीनो हरि गति जानि न जाईजी ॥
कहत कि ले आयो मैं जाई मात दिखायो आईजी ॥
राधागई सदन समुहाई दोहनि दूध भराईजी ॥
परमप्रीति हरि बसन दुरायो जननी द्वार बुलाईजी ॥ २ ॥

दोहा–कहति और की औरही, जननी देखति दौरि ॥
उरलगाय कहने लगी, दीठलगी कहुँठौरि ॥

चौबोला–दीठलगी कहुँ ठौरि बूझती नेह विकल ह्वै माईजी ॥
कहाभयो राधा तोंहि प्यारी जातें गइ मुरझाईजी ॥
अबहीं खरक गईतूनीके कौनव्यथा है आईजी ॥
एक लरिकनी संगही मेरे अहि कारेतिहिं खाईजी ॥ १ ॥
मुर्छ परी वह धरणि मझारी मैं डरपी जियभारीजी ॥
श्याम बरन इक ढोटा नंदको कहत ताहि बनवारीजी ॥
जानाति नाहिं कौनकी बारी कछु पढिके उन झारीजी ॥
अब कछु नीके नेकभयोरी सुनि डरपी महतारीजी ॥ २ ॥

दोहा–अतिप्रबीन[1] श्री राधिका, दईमात समुझाय ॥
सुन जननी[2] राधा वचन, उरसों लईलगाय ॥

चौबोला–उरसों लई लगाय कहति यह बिधना[3] आज बचाईजी॥
एक सुता द्वै तात कठिन परि देवन द्वारेपाईजी ॥
बची सर्पते कुँवरि लाडिली भईआज कुशलाईजी ॥
घरनाहिं रहत फिरत भइ हिरनी खिजी कुँवरि सों माईजी ॥१॥
कितनो कहत तोहिंमैं हारी दूरकहूं जिनजावैजी ॥
हैंलरिकनी सबनघरमाहीं तू नहिं नेक डरावैजी ॥
कबहुं खरक कबहूं बनमाहीं कबहुं यमुनतट धावैजी ॥

१ चतुर। २ माता। ३ करतार।

चितै अकाश फिरत पगधरनी बात कहत खिजलावैजी ॥ २ ॥

दोहा—कुशल करी कुल देव अब, विपते लई बचाय ॥
शीतल जलले तुरतही, दीनी मात न्हवाय ॥

चौबोला—दीनी मात न्हवाय बारही बार कहत कछुखारीजी ॥
अब कहुँ खेलन दूर न जारी मान कह्यो मेरी प्यारीजी ॥
यह सुनि हँसत मनहिं मन प्यारी हृदय ध्यान बनवारीजी ॥
कहति दूर अब कहूँ न जैहौं खेलहुँ घरहि मँझारीजी ॥ १ ॥
तिनके चरित कहा कोउ जाने शिव विधि पात न पाराजी ॥
जनरंजन भंजन विपतीके राधानंद कुमाराजी ॥
गुप्त प्रगट लीला हरि ठानी ब्रजमें युगल बिहाराजी ॥
देख बालछबि अति सुन्दर सब गुरुजन होत सुखाराजी॥२॥

दोहा—नव किसोर चित चोर तिय, असुर लखत विकराल ॥
सर्व रूप सब घट बसत, सब विधि करन कृपाल ॥

चौबोला—सब बिधि करनकृपाल सर्वते परे सकल घटमाईजी॥
सर्वोपरि सब गुणके लायक हरी सकल फलदाईजी ॥
सर्व आदि हरि अंतर्यामी जनकी करत सहाईजी ॥
मायाब्रह्म कृष्ण अरु राधा अगम अगाधि सदाईजी ॥ १ ॥
बसे श्याम श्यामा उर माहीं देखे बिन न सुहाईजी ॥
खेलन मिस वृषभानुकिशोरी नंद महर घर आईजी ॥
टेरत मधुर वचन सुखदाई घरहैं कुँवर कन्हाईजी ॥
सुनत श्याम कोकिल समवानी जानि लई मन माईजी ॥ २ ॥

दोहा—कहत रहे कछु मातसों, सो सब गये विसार ॥
तू पहिचानतमाय इन, कहत बारही बार ॥

चौबोला—कहत बारही बार काल्हमैं गैलभूलगयो माईजी ॥
बांह पकरिमोको इन आन्यो दीनो घर पहुँचाईजी ॥

तो सकुचाति आवत इतनाहीं मैं दे सौंहबुलाईजी ॥
अति नागर जननी हिरदे में दियो प्रेम उपजाईजी ॥ १ ॥
कहति मात हरिसों मन हर्षित भीतरलेहु बुलाईजी ॥
लखि प्यारी आनंद भयो हरिके चले लेन सुखदाईजी ॥
नैनसैन मिल दोउ सुखपायो बिरहाकिताप नशाईजी ॥
भये मगन दोउ रूप निहारी अति आनंद मनमाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कहत श्याम इत आउ किन, तुमको मात बुलाय ॥
बांह पकरि ल्याये दई, जननी ढिग बैठाय ॥

चौबोला—जननी ढिग बैठाय हरषि मन यशुमति रही निहारीजी
बूझति नंद महर की रानी हँसि हँसि बारहि बारीजी ॥
ब्रजमें तोहिं न कबहुँ निहारी कौन गांव तेरो प्यारीजी ॥
कहा नाम है तेरो कोहै तात कौन महतारीजी ॥ १ ॥
भूलिगयो हो काल्ह कन्हाई भली करी तू ल्याईजी ॥
धन्यकोख जिन तोको धारी धन्य घरी जिहिं जाईजी ॥
देख रूप यशुदा अभिलाषी विनती प्रभुहि सुनाईजी ॥
बारबार पूँछति नंदरानी कौन महरकी जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—मैं बेटी ब्रषभानुकी, तुमको जानति माय ॥
बहुत बार मिलनो भयो, यमुनाके तटआय ॥

चौबोला—यमुनाके तट आय जानलई वहतो बडी छिनारीजी
हैं लंगर वृषभानु सदाके हरषि कह्यो नँदरानीजी ॥
करी कछू बाबा लँगराई बोल उठी यों प्यारीजी ॥
ऐसे समरथ कब उन पाई हँसि यशुमति उर धारीजी ॥ १ ॥
कहति महिर कीरति हम जोरी यशुमति कुँवरि श्रृँगारीजी ॥
अब कीजतहों चोटी तेरी कर कंगई निरवारीजी ॥
लैसुमनासुत ओंछ सवारे मोतिनमांग सुधारीजी ॥